SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

June - 2004



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद.



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज देव स्वस्थों की प्राण प्रतिष्ठा आरती कर रहे हैं ।
(श्री स्वामिनारायण मंदिर, पेथापुर)



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मोडपर (मूली) मंदिर में देव स्वस्थो की प्राण प्रतिष्ठा आरती कर रहे हैं ।



पेथापुर मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रसन्नता के प्रतीक स्वस्थ पुष्पहार स.गु. ध्यानी स्वामी को प्रदान करते हुए आचार्य महाराजश्री ।



श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान द्वारा स्थापित सर्वजीव हितावह श्री स्वामिनारायण गुरुकुल चेरिटेबल ट्रस्ट ने "श्रीहरि उपचार सेवा केन्द्र" की स्थापना की । स.गु. ध्यानी स्वामी के साथ है डॉ. दीपक वोरा, डॉ. अमित पटेल, डॉ. गज्जर एवं जशुभाई सोनी और यशवंतभाई सोनी ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ जून - २००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी स्मरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी स्मरेखा	३
३.	उत्सव अपर स्वस्म का गरीमा आचार्य पदकी एक स्वयंभू महोत्सव	५
४.	भगवान श्री स्वामिनाराण तथा श्री नरनारायणदेव का अद्‌भुत मिलन	८
५.	नारायण तथा शिवजी की एकता	११
६.	सदा साकार हैं भगवान	१२
७.	अनन्य अटूट श्रद्धा तथा परिचय	१४
८.	सत्संग	१५
९.	अस्थि बिना का देह	१७
१०.	बाल वाटिका (१) अलौकिक बात	१९
११.	समाचार वृत्तांत	२०

कला :- प्रफुल खरसाणी

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९१२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

ग्रीष्मऋतु में भगवान सूर्यनारायण पूर्ण कला से प्रकाशित होकर सम्पूर्ण जगत को उष्णता से परिपूर्ण कर देतें हैं। गर्मी से सारा जगत त्रस्त हो जाता है, सभी लोग ढंढक की चाहना करने लगते है कोई खाद्य पदार्थ अथवा ढंढे जल या शरबत का सेवन करता है तो कोई एयर कंडीशन अथवा एयरकूलर का उपयोग करता है। यह सभी व्यावहारिकता तो सुखी लोगों के लिए है।

आर्थिक स्थिति से कमजोर या गाँव में रहने वाले लोग साधारण पंखा तथा वृक्ष की छाया में और घड़े के ठन्ढे पानी से आत्म संतोष करते हैं।

यह बात हुई व्यवहारिक जगत की। लेकिन आध्यात्मिक जगत में आधि, व्याधि, उपाधि के त्रिविधतापों से तपते जगत के अज्ञानी जीव को उद्देश्य करके सन्त कहतै है।

सरसपुर नरपुर नागपुर इन तीनों में सुख नाहिं।
या तो सुख हरिचरण में या सुख सन्तन मांहि।

हे जीव ! यथार्थ शांति तो भगवान की शरणागति में है। उन्हीं की चरण में शांति है। इसलिए हे जीव ? भगवान का दृढ आश्रय करके और सच्चे अर्थ में भावपूर्ण हृदय से सत्संग तथा भजन कर लेना चाहिए। जिससे परमात्मा की प्रसन्नता मिले और जन्म सार्थक हो जाय।

जैसे ग्रीम की तपन से बचने के लिए जगत का प्राणी नाना प्रकार की उपाय करता है, उसी प्रकार भगवान का भक्त भगवान को विशेष ठन्ढक मिले इसके लिए अपनी भावना व्यक्त करता है। ऋतु के अनुसार भगवान के मंदिर में भोजन की थाली में आम का रस, शीखंड, भगवान के जागने के समय मेवा तथा ठन्ढे सरबत इत्यादि से भगवान की विशेष प्रकार से भक्त लोग सेवा करते हैं। अक्षय तृतीया से ज्येष्ठ पूर्णिमा तक भगवान को चन्दन से लिपेटा जाता है। शास्त्री में मलयागिरि चंदन कीब रत आती है। नंद सन्त कहते हैं कि गरम तेल में मलयागिरि चंदन का एक बूंद भी डाला जाय तो वह एकदम ठन्ढा हो जायेगा। इसके बाद उसे कितना भी गरम किया जाय तो भी वह गरम नहीं होता है। यही महत्व है मलायगिरि चन्द का।

हम तो मलयागिरि चंदन तो देखे नहीं ? लेकिन बीरधन जैसे लोगों के हाथ से बचाहुआ चंदन प्राप्त होता है। वर्तमान काल में जैसे चन्दन में शुद्धता दिखाई नहीं देती उसी प्रकार यजमान की श्रद्धा तथा पुजारी का भाव भी जाना नहीं जा सकता चन्दन के वस्त्र को धारण किये हुए भगवान का दर्शन करके दिव्य आनन्द का अनुभव करें।

अहमदाबाद नरनारायणदेव तथा बाल स्वरूप घनश्याम महाराज को चन्दन का लेपन किया जाता है। जो मोहक होता है। इसके अलांवा मूली धाम में विराजमान श्री राधाकृष्णादि देवों को चन्दन का लेपन करके मोहक बना दिया जाता है। भगवान को प्रार्थना करिये कि हमारे हृदय में जलता हुआ त्रिविध ताप शीतल तथा शान्त होजाय ऐसी श्री प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई - २००४

१. प.भ. प्रकाशभाई, अमृतलाल पटेल (जवाडावाला) तथा प.भ. रमेशभाई सोमाभाई पटेल, प.भ. पोपटभाई सवजीभाई नाकराणी, प.भ. मनुभाई बचुभाई गडेरा तथा प.भ. सुरेशभाई शंकरलाल पटेल के यहाँ पदार्पण (हीरावाड़ी बापूनगर)

प.भ. मनसुखभाई अरजणभाई नाकराणी के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।

प.भ. भावसार जसवंतलाल डाह्यालाल के यहाँ पदार्पण ।

प.भ. राजेश जगदीशभाई भावसार के यहाँ पदार्पण, जोधपुर ।

प.भ. मगनभाई शंभुभाई के यहाँ पदार्पण, बापूनगर ।

प.भ. पटेल संजयभाई लालजीभाई के यहाँ पदार्पण, महावीरनगर ।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर रिंदोल जि. गान्धीनगर मूर्तिप्रतिष्ठा में पदार्पण ।

प.भ. चिमनलाल बबलदास गज्जर के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण (मेमनगर)

कोठा गाँव में प.भ. हरिलाल हरिदास के यहाँ पदार्पण ।

प.भ. जयेशभाई टी. सोनी के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट ।

प.भ. कान्तिभाई खवजीभाई रतीमाणी के यहाँ पदार्पण, पालडी ।

प.भ. प्रमोदभाई के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण, बोपल ।

३. रतनपर (मूलीदेश जि. सुरेन्द्रनगर) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

४. प.भ. खवजीभाई पटेल के सहजानन्द ट्रवेल्स में पदार्पण, बापूनगर ।

५. पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पुनः प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६. प.भ. महेन्द्रभाई बाबूभाई गांधी (एडवोकेट) के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट ।

७. श्री राजदीप भास्करभाई ब्रह्मभट्ट कें यहाँ पदार्पण, नारणपुरा ।

८. श्री स्वामिनारायण मंदि कांकरिया (रामबाग) शिखरबद्ध मंदिर खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण ।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.भ. बलदेवभाई एम. पटेल के यहाँ पदार्पण पालडी ।

१०. प.भ. रतीभाई ईश्वरभाई की दुकान के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।

११. प.भ. शांतिलाल (बचुभाई) गंगारामभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण ।

प.भ. सुभाषभाई चिमनलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, वटवा ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) पाटोत्सव पर पदार्पण ।

१३. थोबाउ (राज. जि. झालोर) नूतन मंदिर मे मूर्ति प्रतिष्ठा पर पदार्पण ।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर मानगढ़ (हऴवद मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. श्री लक्ष्मीकान्त वी. पटेल के मुक्तजीवन कलरलेब के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, वस्त्रापुर ।

प.भ. शामजीभाई धरमशीभाई दलवाडी के यहाँ पदार्पण बोपल ।

प.भ. दिनेशभाई के. भगत के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट ।

१७. प.भ. हेमंतभाई नारायणभाई शुक्ल के यहाँ पदार्पण, ड्राइव-इन-रोड ।

१८. प.भ. घनश्यामभाई ज्योतिषचन्द्र शाह के यहाँ पदार्पण, अंबावाडी ।

१९. प.भ. सुरेशचन्द्र फरसुराम त्रिवेदी के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।
प.भ. जानी रसिकभाई भाईशंकर के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।

२०. सुदामा एन्टर प्राइज के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण पालडी ।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर नसीतपर (मूलीदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा पूर्संग पर पदार्पण ।

२२. जेतलपुर श्री स्वामिनारायण गुरुकुल "रजत जयंती" प्रसंग पर पदार्पण ।

२३. डेमई से यु.के. तथा अमेरिका के धर्मप्रवास पर पदार्पण ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

मई - २००४

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरीया रामबाग शिखरबंद्ध मंदिर की खात विधि में पदार्पण ।
प.भ. हितेश पी. पंड्या के कहाँ पदार्पण, इन्कमटेक्स

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड पारायण प्रसंगपर पदार्पण ।

२३. जेतलपुर श्री स्वामिनारायण गुरुकुल रजत जयंती प्रसंग पदार्पण ।

२४. नसीतपर (ता. टंकारा मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण

२८. प.भ. रेवाभाई जोईताराम पटेल के यहाँ माणसा गाँव में सत्संग सभा में पदार्पण ।

२९-३०.छपैया (यू.पी) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

३१. ईडर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

terf

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन ऐन्ड रिसर्च फाउन्डेशन में

एडमीशन चालू है

नारणपुरा के अन्नत विस्तार में ध.धु. आचार्य महाराज देवेन्द्रप्रसादजी के ट्रस्ट अन्तर्गत श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्यूकेशन रिसर्च फाउन्डेशन (टर्फ) अंग्रेजी जूनियर के.जी. से कक्षा ८ तक अंग्रेजी मीडियम तथा कक्षा १ से ७ तक गुजराती मीडियम में अभ्यास करने के इच्छुक विधार्थी ऐडमीशन ले सकते हैं - ऐडमीशन चालू है ।

संपर्क

terf श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा पासमें ए.आई.सी. जोतल ओफीस के पीछे अमदाबाद

फोन : २७४९१४३१, २७४७९७८३

उत्सव अपर स्वरुप का गरीमा आचार्य पदकी

एक स्वयंभू महोत्सव

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का षष्ठी पूर्ति महोत्सव अद्‌भूत तो था ही परंतु साथ ही साथ एक स्वयंभू महोत्सव भी बन गया ।

ता. ७-३-२००४ के श्री नरनारायण जयंती के शुभदिन पर महोत्सव के लिए सूचित युनि. के मेदान में ध्वजारोपण विधि तथा फूलदोलोत्सव भी होने से रंगोत्सव का आयोजन किया गया था ।

हजारो भाई-बहन हरिभक्त तथा संतो ने प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. बाल लालजी का गुलाब के केसरी रंग के भींगे फुव्वारो से एसा रंग दिया था कि महोत्सव की सफळता का रंग और उमंग अपने आप सभी में उतर गया था ।

जगत के जीव से अपना रंगोत्सव कुछ अलग ही प्रकार का है । क्योंकि हम सभी तो श्री नरनारायणदेव के आश्रित है और उनके रंगो से रंगे हुऐ हैं । ऐसे सुंदर वचनामृत जैसे आशीर्वचन ध्वजारोपण के दिन पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को दिए थे ।

बस बाद में तो "हम सभी श्री नरनारायणदेव के आश्रित हैं ऐसा उत्तम ही है, "इसमें कोई शंका नहीं है" ऐसा केफ, ऐसी उत्तमता का नशा प्रत्येक कार्यकर्ता, सत्संगिओं को ऐसा लग गया कि देखते ही देखते "महोत्सवनगर" सुबह कली में से कमल खिल उठता है वैसे उदित हो गया ।



चलिए हम महोत्सव नगर का विहंगावलोकन करतें है ।

मुख्य द्वार से प्रवेश करते है "श्री हरिचरण" की संगे मरमर जैसी धवल छत्र आती हैं । श्रीहरि के चरणारविंद को प्रणाम करके महोत्सव की तरफ आगे बढते हैं तो कलात्मक विशाल प्रवेश द्वार था । द्वार के आगे ही शहनाई के सूरो से श्री स्वामिनारायण महामंत्र की दिव्य धून सदैव बहती ही रहती है जिसकें मीठे स्वर सभी आगंतूक को अभिभूत करती थी ।

प्रवेशद्वार से अंदर प्रवेश करने पर दाँयी तरफ अखंड धून्य का मंदिर और मंडप था । यहाँ सात दिन के दरम्यान अनेक गाँवो के सत्संगी मंडल एक के बाद एक आकर 'श्री स्वामिनारायण' महामंत्र की धून्य को निरंतर गुंजती ही रखी । मंडप से मंदिर में जाकर श्री घनश्याम महाराज के मेधावी स्वरुप को देखने का मन अवश्य हो जाए ऐसी मनोहर मूर्ति थी ।

अखंड धून्य के पास में अति भव्य मंडप बनाया गया था । जिसमें महाविष्णुयाग यज्ञ के लिए ५०० जितने कुंड थे । दो हजार जितने सत्संगी युग्मों ने विष्णुयाग महायज्ञ का परम लाभ प्राप्त किया था ।

मुख्य प्रवेश द्वारा से एकदम सीधे आगे चलने पर अति भव्य महासभा मंडप था। अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वामी श्री निर्गुणदासजीने श्री सत्संगिभूषण पारायण की कथा रसमधुर शैली में सात दिन पर्यंत की थी।

प्रवेशद्वार की बाई तरफ "हमारे महाराजश्री" इस शीर्षक द्वार पू. महाराजश्री के जीवन और कवन को प्रस्तुत करता एक प्रदर्शन किया गया था। श्रीहरि के अपर स्वरूप जैसे प.पू. आचार्यश्री के बचपन से आज तक के उनके जीवन और सत्संग यात्रा की अति दुर्लभ तस्वीरे उसमें थी। श्रीहरि और श्रीहरि के अपर स्वरूप की अभय-झलप प्रस्तुत करता यह प्रदर्शन जैसे इस महोत्सव का हार्द था। स्वामिनारायण वाडी की एक पथ्थर की बैठक पर गन्ने का भोग लगाते पंच वर्षीय बाल लालजी, सेन्ट झेवियर्स स्कूल की समूह तस्वीर में स्वस्तिक बनाकर खड़े किशोर स्वरूप के जगत के नामांकित तस्वीर कारने झूले को झूलाते हुए वर्तमान आचार्य महाराजश्री की तस्वीर खींची। और सुंदर बात तो यह थी कि हम जैसे पू. महाराजश्री के जीवन में झाँककर उनके व्यक्तित्व का साक्षात्कार कर रहें हो ऐसा लगे बिना नहीं रहता।

प्रदर्शन विभाग को छूकर ही विशाल भोजन शाला थी। प्रसाद का समय होते ही यहाँ विशाल जन संख्या होती थी। दाल, भात, सब्जी, लड्डु, जिलेवी, ऐसे विविध व्यंजनो और पकवानों का अखूट प्रवाह चलता ही रहता था। कितनी भी भीड़ हो परंतु थोड़े ही समय में सभी को प्रसाद प्राप्त हो जाता था।

षष्ठी पूर्ति महोत्सव के दरम्यान अनेक मेहमान, राजकीय महानुभव, संत, धर्माचार्य, तथा आमंत्रित पधारते थे। देश-देशों से आए सत्संगी तो होते ही थे। चैत्र महिने की शुरुआत में तो गरमी शुरु हो हो गयी थी। परंतु पानी का संचालन इतना अद्‌भूत था कि किसी को भी भूख-प्यास बाधारूप नही बने। चैत्र के दोपहर जैसे महोत्सव की तरह गुलमहोर और वृक्षो जैसी रंगीन बनकर महक उठती थी।

वैसे महोत्सव का स्थल-आयोजन बहुत ही कम समय में किया गता था। दस हजार जितने सत्संगी, युवा भाई-बहनों ने स्वयं सेवक बनकर महोत्सव की सफलता का भार उढाया था। जिस जगह पर जो काम सौंपा गया था उसे ध्यान से निष्ठा पूर्वक पूरा किया गया। कपडे या पसीने की परवाह किए बना उन्होंनें काम को अपना माना "हमारे महाराजश्री" हम सबके हैं। बस एक यही लगन और उनका यह महोत्सव बाद में और क्या पूछना ? उत्साह पसीने की बूँद- बूँद में चमकते दिखाई देता है।

समग्र षष्ठी पूर्ति महोत्सव की सफलता के पीछे महोत्सव के आर्किटेक और अध्यक्ष जैसे अपने सभी के प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी का कोशल्य पूर्ण आयोजन ही काम कर गया। संत हरिभक्त और युवान स्वयं सेवक को इस तरह तीनों को इस तरह मिलाकर काम किया गया कि महोत्सव ने सांगोपाग सफलता को प्राप्त किया।

महोत्सव दरम्यान प्रायोजित विविध कार्यक्रमोने महोत्सव को चाँद की तरह रोशन कर दिया। समूह यज्ञोपवित, संत दिक्षा, प्लेटिन तुला विधि या फिर पू. महाराजश्री की शोभायात्रा। प्रत्येक कार्यक्रम प्रसन्नता पूर्वक पूर्ण हुआ। दोपरह ३-३० बजे कालुपुर मंदिर से प्रस्थान हुई शोभायात्रा, समग्र शहर को पार करके ८-३० बजे महोत्सव स्थल पर आई तब जो आदमी स्वागत के लिए खड़े थे वे अद्‌भूत थें। एक मात्र आचार्य महाराजश्री के अभिवादन के लिए और उनके दर्शन की इच्छामात्र के लिए सभी राह देख रहें थें। उस तडंप को देखना भी जीवन का एक अवसर है।

समग्र महोत्सव दरम्यान अति सुंदर और महान लाभ का पान अगर सभी ने पाया है तो वह है प.पू. महाराजश्री के आशीर्वचन। प्रत्येक दिन पू. महारजश्री जैसे अत्यंत प्रेमभाव से आशीर्वचन देते थे। सात दिन के दरमियान कहे गए सभी आशीर्वचन का अंश मात्र को भी आस्वादी भी कर लें तो भी वरम् तृप्ति की ढेकार आती है। "आज हम जो कुछ भी है वह अक्षरनिवासी पू. बाबुजी के आशीर्वाद, इन संतो के आशीर्वाद और इस दिव्य सत्संग की शुभेच्छाओं के प्रताप से हैं।

"इस समय आशीर्वाद देने और लेने के लिए ही बैठे हैं। इतने सारे

वृद्ध संत देश-देशांतर से आतें है वे भावना और स्नेह से आकर्षित होकर आऐ हैं। वह संत और हरिभक्त अंत-करणपूर्वक आशीर्वाद दैं।"

"जब सभा में हमारी प्रशंसा होती है तब, देह से तो हम यहीं बैठे होते परंतु मन द्वारा तो हम आपके बीच में बैठे जाते हैं। और सुनकर प्रसन्न होतें हैं कि देखिए इस नरनारायणदेव की गादी और उनके पीठस्थान की कितनी प्रशंसा होती है।"

"हमे तो श्रीजी महाराज के सामने देखना है। श्रीजी महाराजने अनहद परिश्रम करके इस सत्संग का प्रचार किया है। जगत के जीवों को सदाचार युक्त जीवन से मृत्यु के बाद जो प्राप्त होता है वह प्राप्ति हमें देह द्वारा भी प्राप्त हो सकता है। बस ऐसे महिमा समझकर वह अंतिम जन्म लेता है।

"आप किसी अंजान व्यक्ति के घर जाए और वहाँ जाकर आप अपने दादाजी की तसवीर देखते हो और वह व्यक्ति उनकी पूजा करता है। तो उस समय आपके मन में कैसे भाव उठतें है।"

हम भी जब सत्संगी के घर जाते हैं। जब हमारे दादाजी की प्रतिमा तस्विर की पूजा होती हो तब हमारे मन में उस व्यक्ति के विषय में अतिशय अहोभाव उत्पन्न होता है। आत्मीयता आ जाती है।

"इस प्रसंग पर हमें भी कुछ देने का मन हो रहा है। नंद संत जब कच्छ में विचरण कर रहें थे तब छोटे से बालक ने संतो की बहुत सेवा की इसलिए संत बहुत-प्रसन्न हुए और बालक से कुछ मांगने के लिए कहा। बालक ने चतुराई से कहा कि आप को जो सबसे प्यारा हो वह दे दीजिए। और संतो को तो केवल भगवान ही प्यारे होतें हैं। इसलिए उन्होंने बालक को भगवान दिए। तब से उसकी निवारण दृष्टि हुई और वह अच्चुतदास स्वामी हुए। हमनें जैसे श्री नरनारायणदेव को पहचाना है वैसे ही आप सभी को बतलाना है।"



समग्र षष्ठी पूर्ति महोत्सव में आशीर्वचनों का धोध बहता ही रहा।

पर एक ऐसा महोत्सव था कि जिस में लोग स्वयंभू से यहाँ आतें, महोत्सव को मनाते और श्री नरनारायणदेव की महिमा को अंतर में उतार कर बाहर नीकलते।

"श्री नरनारायणदेव पीठस्थान का ही यह उत्सव है। ऐसे प्रारंभिक आशीर्वचन से लेकर "हमने जैसे नरनारायणदेव को जाना है वैसे ही आपको भी परिचित करवाना है" उस अंतिम चरण की भेट सब ही सर्वथा अद्‌भूत था।"

"एक बात कहता हूँ वह सुनिए। (क्योंकि) आप हमारे हो यह हम जानतें है।" गढडा प्रथम के १८ में वचनामृत में प्रगट होती श्रीहरि की ऐसी आत्मीयता जैसे पूरे महोत्सव में पू. महाराजश्री के आशीर्वचन के रूप में फिर से प्रगट हुई थी।

नाम भले षष्ठी पूर्ति महोत्वस था, कार्ड भले पू. आचार्य महाराजश्रीने दिया। परंतु उसका निष्कर्ष तो केवल इतना ही है कि श्री नरनारायणदेव के महिमा और पीठ स्थान तथा आचार्यपद की जो प्राप्ति हुई के स्वरूप में यह जो भी प्रसादी प्राप्त हुई वह अब फिर शायद कभी नहीं मिलेगी। ऐसी उत्सुकता सत्संगिओं को सदैव तरसाती रहेगी। महोत्सव की इससे विशे, दूसरी फलश्रुति क्या हो सकती है।

महोत्सव नगर के मुख्य राजमार्ग के उपर अंग्रेजी सुवाक्य प्रस्तुत करते बडे होर्डिग्स रखे गए थे। उसमें से एक सुंदर वाक्य यह था।

"True Guru is the one who teads to God."

"जो परमात्मा प्रति पहुचाए वही सच्चा गुरु है।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अपने षष्ठी पूर्ति महोत्सव की अनुमति दी और इस महोत्सव के माध्यम द्वारा परमात्मा की पहचान करवाई है। इससे अलौकिक दूसरी सौगात और कहाँ मिल सकती है ?०



भगवान श्री स्वामिनाराण तथा श्री नरनारायणदेव का अद्‌भुत मिलन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)



आज से दो अरब वर्ष पहले सृष्टि के प्रारंभ में जो प्रभु धर्म तथा मूर्ति के द्वारा नरनारायण स्वस्म में भरतखंड में प्रकट हुए थे । आजसे सिर्फ २२२ वर्ष पहले श्री स्वामिनारायण नाम से धर्म भक्ति द्वारा भरत खंड में प्रकट हुए थे । मूर्ति वहीं भक्तिमाता है । नरनारायणदेव बदरिकाश्रममे ऋषि के स्वस्म मे अखंड तप कर उस तप का फल भरतखंड के भक्त को देते हैं । भरतखंड की प्रजा के उपास्य देव नरनारायणदेव तथा मुक्त भक्त नारदजी है । इस बातों का भरतखंड की प्रजा को ज्यादा ख्याल न था अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने समझाया । तथा स्वंय प्रतिष्ठित नव महामंदिरो में से दो मंदिर (अहमदावाद तथा भुज) यह रहस्यमें नरनारायदेव के दिव्य स्वस्म की प्रतिष्ठा की थी । अहमदाबाद मे तो बाहूपाश में भरकर नरनारायणदेव की की प्रतिष्ठा की । निष्कुलानंदजी ने कहा है कि "छो तो एक, पळ दिसो छो दोय, तेनो भेद जाने जन कोइ" (श्रीहरी ने गृह त्याग करने के बाद बद्रीकाश्रम में नरनारायणदेव को मिले । यह दिव्य मिलन श्री आधारानंदमुनिने श्रीहरि चरित्रामृत सागर ग्रंथ में अदभुत प्रकार से वर्णन किया है ।

श्री मुक्तमुनि उत्तमराजा को कथा सुनाते है । हे राजन् ! श्रीहरि दशेरा से अन्नकुट के दिनों में बद्रीनाथ रहे थे । अन्नकुट के बाद ही मंदिर के दरवाजे बंध होते है । अक्षय तृतीया तक बंद रहते है । तब सिध्धपुरुषा पूजा तथा थालकी व्यवस्था करते है । फिर जोषीमठ के वर्णी जोषीमठ जाने लगे । श्रीहरि को भी उन्होने खुब आदर पुर्वक जोषीमठ तक साथ रखा । पश्चात वर्णियो ने श्रीहरि को जोषीमठ में हंमेशा रहने की प्रार्थना की । तब वर्णीने कहा - आपका बहुत भाव है तो फिर हम आयेगे । अभी हिमगीरीमे नरनारायण के आश्रमकी शोभा देखने की तप करने की इच्छा है । आप रस्ता बताओ हम उस रस्ते पर जाते हैं । बर्फ के प्रदेश का डर नही हैं । तब जोषीमठ के वर्णीने श्रीहरि की पूजा कर ठंडी से रक्षा कर पाये वैसा केबल दिया आपतो निबंध है तथा हम तो बंधे हुए है । ये जगह अपनी समझकर फिर दर्शन देना । आप समर्थ है । इसलिए हम कुछ कह नहीं सकते । किन्तु आप जिस रस्ते पर जा रहो हो वह मृत्यु गति के समान है जाने का विचार न करोतो तो अच्छा है । किन्तु श्रीहरि तो निकल पडे । जोषीमठ के वासियों को आश्चर्य हुआ था । मान लिए कि वर्णी कोई अवतारस्म है । या महा सिद्ध नहीं तो हिमगिरिमे कोई नहीं जाता ।

अब श्री हरि हिमगिरि चले तब नारायण भगवानने नर को कहा अक्षराधिपति तप के बहाने हमें बालस्वरुपका दर्शन देने आ रहे हैं । खुलेपाव या अकेले या रहे है । इसलिए हिमगिरि को कहो कि मूर्तिमान सन्मुख जाए । वर्णी श्रीहरि को कष्ट न हो उसका ध्यान रखो तब हिमगिरि को नर भगवानने नारायण की आज्ञा कही । जिस से हिमगीरी देव स्वस्म धारण कर श्रीहरि को सन्मुख आए । और हाथ जोड़कर साष्टांग प्रणाम करे और कहा कि आप हमे पावन करने पधारे है । आप कहे तो वाहन ले आऊ । में साक्षात हिमगिरि हूं नरनारायण भगवान की आज्ञा से आपके सन्मुख आया हूँ

और दर्शन का लाभ हुआ है । श्रीहरिने कहा हमें वाहन की ईच्छा नहीं है चलकर यात्रा करने से अनंत फल है । इसलिए चलने में ही हमे आनंद है । उसी समय कुछ ऋषियों के साथ नर भी वहाँ गये थे । नर भगवानके दर्शन कर श्रीहरि को बहुत ही आनंद हुआ । ऋषि - मुनि ने भी फल-फूल अर्पण किया शीतल जल आता था श्रीहरि वहाँ स्नान किये । श्री हरि ने नित्य विधि कर फल-फुल नैवध कर नर आदि ऋषीयों को प्रसाद दिया । खुद भी थोड़ा खाया । हर रोज पांच गाँव में चलते तीसरे दिन बदीवन पहुंचा वहाँ की महालौकिक शोभा देख प्रसंन हुए । विविध प्रकार के पशु, पक्षी तथा झरनां के मधुर आवाज से वन प्रीति के योग्य था । वहां एक अतिशीतल जल वाली नदी आयी । उसमें जो गिरे वहाँ जम जाये ईतनी ठंडी थी । किन्तु श्रीहरि इसे एकदम आराम से पारकर गए क्योंकि निष्कामी भक्त को अखंड रहते है ।

नरनारायण जिस आश्रम में तप करते थे उसके समीप श्री हरि पहुंचे है । तब नारायणदेव सन्मुख आए । भगवान के दोनों स्वरुपका मिलन देखने ब्रह्मादिक देवता आए और पूष्पों से झड़ी बरसाई प्रथम नारायण देव श्रीहरि को मिले तथा अपार प्रेम से सादर भेटने लगे । शाम हुई तब और ऋषिमुनि तप मे से निवृत हो कर श्री हरि के दर्शन करने आए । फिर श्रीहरि प्रेमभाव के वस हो कर नारायण देव के चरण मे पड़े । तब नारायण देवने कहा - आपके चरणो के प्रताप से आप ये आश्रम पवित्र हुआ कार्तिक कृष्ण अष्टमी की अधेरी रात्री के वाबजूद मुनि ने काष्ट की मसाल से अजाला किया । और श्रीहरि के बैठा कर नारायण देव बैठ तथा विकट भूमि पार करने का कारण पूछा और कहा सिद्ध पुरुषा और केदार नाथजी की सहायता से ही कोई यहां आ सकता है । आप आए बहुत कृपा हुई । यहाँ सब आपका चिंतन करते है । और आपके साक्षात्कार से हमारे तप फले हैं । हम कृतार्थ हुए । इस आश्रम तथा बद्रीतल की जगह का धन्य भाग्य है । यह आपका आश्रम हैं ऐसा मान कर सुखपूर्वक रहो । आप तो अपना समर्थ छुपा कर रखते है किन्तु आपतो काम तथा सर्व से परे हैं । आपके वचन जीवको मुक्ति देने वाले है । यदि आपके बचन कोई दृढता पूर्वक पाले तो उसे मोक्ष मिलजाए । फिरश्री हरि बोले जो बड़े होते हौ वो दूसरेको बड़ा समझते है । जितना पात्र होता है उतनाही पानी आटता है आपको सिधुं जैसेहो ईसलिए दुसरेको ऐसा समझते है । कारण बताइए की जगतमे गुरु प्रजा, राजा सब एक जैसे बन कर मास, मदिरा, चोरी, व्यभिचारमे डूबे रहते है । धर्म किसीको प्रसंद नहीं है । यह सब देखकर उदास होकर यहाँ आए है । हमने देखा है कि आपके सिवा कोई इसका उपाय और सहाय देने वाला नही है ।

वर्णी से नारायण देव कहते है कि आप तो महा समर्थ हो और सहायता मागनेकी बात करते है । आप करो वही धर्म है । आप संकल्प करो वह सभीको करना पड़ता है । कलियुग तथा अधर्म आपके समक्ष क्या है ? तप तथा तीर्थ के फल की आपको क्या जरूरत है । आपही सब के फल दाता हो इस प्रकार दोनों स्वस्म परस्पर मनुष्यभाव लाकर विनोद करते है । तीन महिने तक वर्णी आश्रम में रहे तथा ध्यान स्मरण करते अन्नत्याग कर तप किया । सभी को आनंद हुआ । दूसरे खंण्ड के देव भी वर्णी के पास आकर पूजा स्तुति करते ।

सभी मुनि भावपूर्वक पूजा करते थे । श्रीहरि नारायण देव को प्रश्न पूछते और वे उत्तर देते । नारायण देव ने कहा कि प्राचीन ग्रंथो में अनेक प्रकारकी भिन्न रुचिके लोगों के लिए बाते लिखी गई है । जो बुद्धिमान है उन्हें सार ग्रहणकर लेना और दूसरे गलत मार्ग पर चले जायेंगे । और उन्ही लोग को समझाने के लिए आपने मनुष्य अवतार धारण किया है। आपका जो संग करेगा वह भव दुःख से मुक्त होगा । आप समर्थ हो

जो चाहो वह कर सकते हो । दूसरे तो ब्रह्मा और नारद जैसे हो तो भी विचार किए बगैर वर्तन करे तो कलंक लगे, सभी कलंको में नारीका कलंक अधिक है । उस विषय में त्यागी को अधिक विचार रखना चाहिए । आपतो आकाश के समान अखंड निर्लेप है ।

नारायण की बातो का स्वीकार करते हुए श्रीहरि ने कहा आपतो भरतखंड के ईश हो । हम आपके शिष्य है । तप करने की बहुत इच्छा है लेकिन आप जो कहे वह हमे करना है । आप साक्षात् ईश्वर होने के बावजूद जन हितार्थ तप करते है । श्रीहरिका वचन सुननारायणदेव बोले-दुर्वासाने यहाँ सभी को श्राप दिया है वह हमारी सबकी सहायता के लिए प्रकट हुए है । उध्धवजी भी प्रकट हुए है । वे गीरनार की छाव में ईश्वरकी इच्छा से आयेंगे । आप सभी को दर्शन देते हुए पश्चिम देश जायेंगे । वहाँ वे आपको मीलेंगे । नारायण देवकी मरजी मान वे तैयार हुए । सजल नेत्रों के साथ गद्‌गद् होकर कुछ बोले बिना श्रीहरि हिमगिरि को साथ लेकर चले । श्रीहरि के बगैर वह श्रम सूना लग रहा था । श्रीहरि तत्पश्चात् मानसरोवर पहुंचे । वहाँ का जल निर्मल तथा ठंडा था । चारों तरफ वृक्षों पर पंछी जल में हंस चहक रहे थे । उसमें श्रीहरि ने स्नान किया । हिमाचल स्वादिष्ट फल लाये उसे श्रीहरि खाये तथा हिमाचल को प्रसाद दिया । उस सरोवर में से सरयू नीकलती है वहाँ से चले और अक्षय तृतीया को बद्रिनाथ मंदिर में आ कर दर्शन किए । सेवकों ने उन्हें पहचान प्रसाद दिया । फिर वहाँ के (जोषीमठ के) वर्णीओ के पूछने पर सब बताया और कहा कि कलियुग का वहाँ प्रवेश नहीं है । यह सुन सब आश्चर्य हो गये । अपने धन्य भाग जो ऐसे दिव्य पुरुष के दर्शन से चकित हो गए ।

जिन्हों ने स्वामिनारायण तथा नर नारायणदेव को पहचाना है उन्हें यह कथा अद्‌भुत लगी होगी । अहमदाबाद मंदिर में स्वयं श्रीजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित नरनारायणदेव की मूर्ति में प्रत्यक्ष रहे है । रंगमहोल के घनश्याम महाराज बिल्कुल बैसेही है । उनकी आंखे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से मिलती है । कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर के नरनारायणदेव के दर्शनका फल हिमगीरी मे नरनारायणदेव के दर्शन के तुल्य है ।

अहमदावाद मंदिर से नया प्रकाशन श्री स्वामिनारायण रत्नाकर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से अपने अहमदावाद मंदिर से हरिभक्तों की चाहना को ध्याम में रखकर सम्प्रदाय का साहित्य श्री स्वामिनारायण रत्नाकर भाग-२ का सुन्दर प्रकाशन किया गया है । प्रत्येक हरिभक्त इस पुस्तक को लें और पठन मनन करें ।

प्राप्ति स्थान - साहित्य केन्द्र, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालूपुर, अहमदावाद

षष्टि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर "आचार्य कीर्ति सुधा का प्रकाशन"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर अहमदावाद मंदिर से प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सम्प्रदाय के बहुत सारे शास्त्रों का प्रकाशन करने में आया । जिसमें अपने श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविधालय जेतलपुर अक्षर महोंलवाडी के प्रधानाचार्य प.पू. डॉ. वाचस्पति मिश्रने श्री नरनारायण देव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर "आचार्य कीर्ति सुधा" नामक संस्कृत श्लोकावली युक्त पुस्तिका तैयार करके उस प्रसंग पर जिसका विमोचन करने में आया । जिसका अनुवाद श्री नरेन्द्रभाई पंड्या प्रधानाचार्य (सोला विद्यापीठ) ने किया है । यथार्थ रूप में यह पुस्तिका व्युत्पन्न अद्‌भूत एवं उपयोगी है । अपने अहमदावाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से मिलेगी ।

- कोठारी स्वामी

नारायण तथा शिवजी की एकता

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

वेद में नारायण तथा शिवजी की एकता का उल्लेख किया गया है इसी बात को शिक्षापत्री में भी कहा गया है।

एकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायण महेशयोः ।
उभयो ब्रह्म रूपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ॥

नारायण तथा शिवजी को एकात्मरूप से जानना चाहिए। क्योंकि ये दोनों देवता वेदप्रतिपादित हैं । ब्रह्मरूप में स्वीकार किया गया है।

इस श्लोक में चार शब्द आवश्यक हैं । वेद, एकात्म्यभाव, नारायण, शिव, अपौरुषेय वेद का श्री सहजानंद स्वामीने अपनी शिक्षापत्री में बहुत महत्व दिया हैं। शिक्षापत्री में वेद का उल्लेख नीचे अनुसार है -

- वेद की निंदा कभी नहीं करना। सुनना भी नहीं (शिप. २१)
- चार वेद तथा व्यास सूत्र तथा श्रीमद् भागवत् तथा महाभारत में विष्णु सहस्त्रनाम एवं श्रीमद् भगवद् गीता एवं विदुरजी द्वारा कही गयी नीति तथा स्कन्दपुराणान्तर्गत वासुदेव माहात्म्य धर्मशास्त्रान्तर्गत याज्ञवल्क्य स्मृति ये आठ सत्शास्तरों हमें इष्ट हैं। (शि.प्र. ९३-९५)
- नैष्ठिक ब्रह्मचारी लोग वेदशास्त्रों का अभ्यस करें।(शि.प्र. १८५)
- श्रुति-स्मृति में प्रतिपादित जो आचार धर्म उसका पालन करना।

प्रमाणभूत ग्रन्थ वेद है । प्रायः सभी सम्प्रदाय वेदका आदर करते हैं। समग्र विश्व के पुस्तकालयों में सुलभ है जिसमें एक ईश्वर वाद का प्रतिपदान किया गया है।

पौराणिक दृष्टि से नारायण भगवान विष्णु का नाम हैं। भगवान विष्णु इस सृष्टि के संचालक हैं । लक्ष्मीजी उनकी धर्मपत्नी हैं। शेषनाग आसन है गरुण वाहन है । वेदों की दृष्टि से विष्णु नारायण दोनो एक ही के वाचक हैं।

"वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स विष्णुः"

चर-अचर रूप इस जगत में व्याप्त रहने वाले परमात्मा का नाम विष्णु है।

वेद में भी विष्णु शब्द ईश्वर वाचक है -

आपो नरा इति प्रोक्ता आपो नर वै सूनवः ।
वा यदस्यानन पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥

जल तथा जीवों में नाम आरा है वह अयत अर्थात् निवास स्थान है । जो सारे जगत् में व्यापक होकर रहते हैं उस परमात्मा का नाम नारायण है । विष्णु तथा नारायण दोनों ही समानार्थक सर्वव्यापक ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त हैं।

पौराणिक दृष्टि से शिवजी पार्वतीजी के पति हैं, गणेश तथा कार्तिकेय के पिता है । दक्षप्रजापति के दामाद हैं। उनका वाहन नंदी है।

वेदों की दृष्टि से शिव, रुद्र, महादेव, शंकर इत्यादि एक ही ईश्वर के गुणवाचक हैं।

यो रोदयत्यन्याय कारिणोजनान् सरुद्रः ।

अर्थात् जो दुष्ट कर्म करनेवाले को रूलावे उसे (उस परमात्मा को) रूद्र कहते है।

जो कल्याण स्वरूप है तथा कल्याण करनेवाला हैं उसे शिव कहते है।

"यो महतां देवः स महादेवः"

जो महान देवो का देव है अर्थात् विद्वानों का विद्वान सूर्यादि का प्रकाशक उस पर मे खेर का नाम महादेव है।

सहज आनंद का संदेशक श्री सहजानंद स्वामीने शिक्षापत्री में "नारायण तथा शिवजी के एकात्मक रूप का प्रतिपादन किया है जो वेद, विष्णु सहस्त्रनाम, शब्द शास्त्र भी अनुमोदित करता है।

नारायण तथा शिवजी ये दोनों अलग दिखाई देते हैं। लेकिन दोनों एक ही है।

नारद पंचरात्र में इसका प्रमाण मिलता है -

शिवो हरि हरिः साक्षात् शिव एव निरुपितः ।

(अनुसंधान पेईज नंबर १३ पर)

सदा साकार हैं भगवान

- डॉ. भरतभाई एन. सिंधव (बडोल-भाल)



भगवान श्री स्वामिनारायण से वचनामृत गढ़डा प्र. ७१ में सोमला खाचरने प्रश्न पूछा कि भगवान अपने भक्त का सम्पूर्ण अपराध मांफ करते हैं। ऐसा कौन अपराध है जो मांफ नहीं करते ? तब श्रीजी महाराज ने कहा कि "दूसरे सभी अपराध माफ करते हैं लेकिन भगवान के भक्त का द्रोह कभी मांफ नहीं करते। इसलिए भगवान के भक्त का कभी द्रोह नहीं होना चाहिए। इसके अलांवा सभी अपराधों की अपेक्षा बड़ा अपराध भगवान के स्वरुप का खंडन। इसलिए ऐसे अपराध तो कभी नहीं करना चाहिए। यदि करता है तो उसे पंच अपराध का पंचमहापाप से भी अधिक पाप लगता है। भगवान तो साकार मूर्ति है। यदि उस स्वरुप को निराकार समझा तो उसी स्वरुप का खंडन कहा जायेगा।

प्यारे भक्तजन सहजानंद स्वामीके गुरुरामानंद स्वामी तथा रामानंद स्वामी के गुरु आत्मानंद स्वामी थे। परंतु आत्मानंद स्वामी भगवान को निराकार समझते थे। इसलिए रामानंद स्वामीने आत्मानंद स्वामी का त्याग कर दिया। इसलिए भगवान् को सदा साकार मानकर उपासना करनी चाहिए आत्मानंद स्वामीमें बहुत सारे गुण थे। लेकिन भगवान को निराकर मानने के कारण रामानंद स्वामीने उनका त्याग कर दिया। इसलिए भगवान को सदा साकार मानकर उपासना करनी चाहिए। इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत ग.प्र. ४० में कहा है कि यदि भगवान के स्वरुप को साकार मानकर दृढ निष्ठा से भजन करता है और वह ब्रह्मरुप भी हो जाता है तो उसकी निष्ठा जाती नहीं है - बनी रहती है। भले ही निराकार प्रतिपादन करने वाले नाना शास्त्रों का श्रवण करे - लेकिन भगवान के साकार स्वरुप का उस भक्त के मन में वही रुप बना रहता है।

निष्कुलानंद स्वामी हरिस्मृति ग्रंथ के ६ठे प्रकरण में साकार उपासना का प्रतिपादन करेत हुए लिखते हैं कि -

एम साकार मूर्ति संबंधे,
सुखिया आदि अंत मध्ये।
मूर्ति बड़े मोट्यप सहुनी,
कोण तपसी ऋषिमुनि-सुखकारी जी।
तेम मूर्ति तमारी मेली,
सुख माटे मळशे सेनली (राब)
तमे जना सुखना काज सदा
साकार छो महाराज - सुखकारी जी।
साकार विना न सरे काज,
माटे साकार छो सुखधाम।
चार वेद छे ए वात,
प्रभु प्रगट छो साक्षात् सुखकारी जी।
षट्शास्त्र छे खोली मोट्यप,
पगटनी वणतोडी अपार।
अढारह पुराण मां एम कहे छे,
प्रभु सदा साकार रहे छे सुखकारीजी।
स्मृति श्रुतिनुं ए तान,
सदा साकार रहे भगवान।
तेणे करी रहे छे समुं (सरखुं) नहीं तो
वणसी (वगडवुं) जाप वसमुं
सुखकारी जी।
न रहे एक स्थिति एकरीति,
सहु कोई आदरे अनीति।
धर्म धरा (पृथ्वी) पटने रहे
सहु कोई अधर्म ने ग्रहे - सुखकारी जी।
देव दानव मानव मुनि,
माने नहीं मरजादा (मर्यादा) कोईनी।
चारवर्ण - आश्रम चारे,
सहु भ्रष्ट थाय नर-नार सुखकारी जी।

प्यारे भक्तजन ? इस समय बहुत सारे संप्रदाय भगवान को निराकार मानकर भजते हैं और दूसरे को समझाते

हैं। लेकिन भगवान श्री स्वामिनारायण वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण ४५ में कहते हैं कि भगवान पुरुषोत्तम तो सदा साकार ही रहते हैं। और तेज पुंज हैं। तथा अन्तर्यामी रुप से सर्वत्र व्याप्त हैं। ऐसे सच्चिदानंद स्वरुप ब्रह्म परमात्मा हैं। श्रुति भी यही कहती है कि भगवान माया के सामने देखते थे तो क्या देखने वाले को आंख ही होती हैं ? हाथ-पैर नहीं होता ? इस से यह स्पष्ट हो गया कि परमात्मा साकार है। जैसे जल निराकार है लेकिन जल के देवता वरुण अपने लोक में साकार रुप से विद्यमान रहते हैं। जैसे धूप निराकार कही जाती है लेकिन सूर्य मंडल में रहनेवाले सूर्य देवता साकार हैं। इसी प्रकार सच्चिदानंद ब्रह्म निराकार हैं और पुरुषोत्तम भगवान साकार हैं। जो सर्वत्र व्यावक रुप में सच्चिदानंद ब्रह्म वही पुरुषोत्तम भगवान का तेज है। इसलिए पुरुषोत्तम भगवान तो सदा साकार ही है। लेकिन निराकार तो नहीं है। जो उन्हे निराकार समझता हैं वह जाना ही नहीं।

श्रीजी महाराज अपने भक्त के ऊपर तथा सन्तों के ऊपर कब प्रसन्न होते यह वचनामृत ग.प्र. ३७ में स्पष्ट कहा गया है -

"भगवान के भक्त भी सदा साकार ही रहतै हैं। ऐसा समझने वाला भले ही कितने वेदान्तियों के वेदान्त की बात सुने लेकिन निराकार का कोई असर ही नहीं पड़ता। इस प्रकार जिसे भगवान के सादार रुप की दृढ़ता हो गयी है। चाहे वह कैसा भी हो वह 'मुझे बहुत प्रिय है। उस पर माया - काल कर्म - की गति नहीं होती है। ऐसा चाहे जितना शास्त्र श्रवण करे तो भी भगवान में साकार बुद्धि बनी ही रहती है। ऐसे निष्ठावाले संत की जल रजकण मस्तकपर रखते ही हैं। और उन्हे किसी प्रकार की पीड़ा देने में भी डर लगती है साथ ही ऐसे संत के दर्शन में महान पुण्य लाभ भी है। इसलिए भगवान सदा अपने अक्षरधाम में साकार रुप में विराजते हैं।

"कईवार अमे कह्युं, तमे सांभळीयुं सो वार,
काम पड़े ते वात नो नथी रहेतो अपर विचार।
(भ. चिन्तामणी-९७)

इसलिए श्रीजी महाराज तथा संत पुरुषों का आश्रय रखकर इनके वचन में विश्वास रखकर यदि इस प्रकार के निष्ठा से उपासना करें तो निश्चित ही भगवान की प्रसन्नता का मार्ग सरल हो जायेगा।

(अनुसंधान पेईज नंबर ११ का)

अर्थात् शिव ही हरि है और हरि ही शिव हैं।

शिवद्वेषी हरि द्रोही विष्णु नित्यं भजन्नपि

अर्थात् भगवान का भजन करता हो और शिवजी का द्वेष करता हो तो भगवान का द्रोही कहलायेगा।

शिक्षापत्री भाष्य में शास्त्री हरिकेशवदासजी ने लिखा है कि "नारायण तथा शिवजी की एकता है" इसमें जो नारायण शब्द है वह वैराज नारायण समझना चाहिए। शिव अर्थात् कैलासपति समझना चाहिए। कारण यह कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश ये तीनों वैराजनारायण में से उत्पन्न हुए हैं। अर्थात् अनकी नाभी से ब्रह्मा, हृदय से विष्णु, ललाट से शंकर उत्पन्न हुए है। इसलिए वेदमें वैराजनारायण तथा शिवजी की एक रुपता का प्रतिपादन किया गया है।

उपनिषदों में उल्लेख है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश ये तीनों परब्रह्म की विभूतियां हैं। ब्रह्मा का कार्य सृष्टि उत्पन्न करना, विष्णु का कार्य धारण करना, पोषणकरना, वर्धन करना, शिवका कार्य - प्रलय करना जगत का विलय करना। शिक्षापत्री में २१२ श्लोक है। शिक्षापत्री में करीब ६६ बार श्रीकृष्ण के नाम का उल्लेख किया गया है।

इस में सहजानंद स्वामी ने श्रीकृष्ण को अपना इष्टदेव तथा इन्हीं की उपासना की बात की है। उन्ही के अष्टाक्षर मंत्र जप करने का स्पष्टीकरण किया है। (उदाहरण - शिक्षापत्री श्लोक ३९, ४९, ५३, ५४, ५७, ६०, ६४, ८६, १०८ इत्यादि)

अन्त में इतना ही कहना है कि श्री सहजानंद स्वामी ने शिक्षापत्री के ४७ वें श्लोक में वेद प्रतिपादित एकेश्वरवाद की भावना को व्यक्त किया है। उसे धर्माचार्यो, सन्तो, विद्वानों कार्यकर्ताओं से निवेदन यह कि साधारण जनता को अनेकेश्वर वाद से एकेश्वरवाद की तरफ ले जायं। अवतार के अवतारी - कारणों के कारण ऐसे करुणानिधान श्री सहजानंद स्वामी को कोटि-कोटि प्रणाम।

अनन्य अटूट श्रद्धा तथा परिचय

- चंदुभाई के. पटेल (अमदावाद)

इस कलियुग में प्रभु स्वामिनारायण सत्य है और कई बार प्रत्यक्ष देखने में भी आया है। ऐसा ही एक प्रसंग प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के चरणों में श्रीजी महाराज की प्रेरणा से प्रस्तुत करने की ईच्छा हो रही है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के निमित्त पारायण प्रसंग पर उपस्थित गुजरात राज्य के माननीय मंत्रीश्री चूणासमा का परिचय देते हुए पू. पी.पी. स्वामी ने नर्बदा बांध की ऊंचाई को कोर्ट में रोका गया है और उसी को ध्यान में रखकर चूणासमा ने महाराजश्री को निवेदन किया कि यह कार्य सरल बने और कार्य प्रगति के मार्ग पर हो। महाराजश्री चूडासमा के निवेदन पर नर्मदाबांध की पूर्णता हेतु आशीर्वाद ही नहीं दिया बल्कि भगवान शालिग्राम को साथ लेकर बांध के जल में अभिषेक करने का संकल्प लिया।

यह सभी बात को स्पष्टीकरण महाराजश्री की षष्ठी पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर चूणासमा ने किया। उन्हों ने बताया कि नर्मदा बांध की ऊंचाई का केश कोर्ट में फंसा हुआ था और कई वर्षों से कार्यवाही चल रही थी लेकिन क्रिया नहीं हो पा रहा था। परिणाम स्वस्थ प्रगति बाधित थी। अन्तमें महाराज श्रीका आशीर्वाद तथा भगवान द्वारा पूजित श्री शालिग्राम भगवान को नर्मदाबंध में अभिषेक कर प्रतिष्ठित किया गया। परिणामगतः थोडे ही समय में जैसे कोई जमत्कार हो गया हो ऐसी ऐतिहासिकतता गुजरात के लिए लाभदायक सुप्रिमकोर्ट ने फैसला दिया कि नर्मदाबंध की ऊंचाई बढायी जाय। ऐसा फैसला सुनकर - गुजरात के सभी नागरिक, सन्त, भक्त, सत्संगी महाराजश्री के साथ पुनः नर्मदाबंध पर जाकर श्रीजी महाराज की पूजा अर्चना करके नर्मदा के जल में स्नान किया। उस समय आचार्य महाराजश्री ने नर्मदा मैया की मूर्ति की प्रतिष्ठा की। और आज भी वहाँ नमर्दा मैया की मूर्ति प्रतिष्ठित विद्यमान है।

उपरोक्त प्रसंगप्राय) सभी के लिए सामान्य लगेगा। परंतु हमारी दृष्टि से तो यह प्रसंग कुंडाल गाँव के कलाभगत के गरमलोहे के परचे से कम नहीं है।

इस जमाने में प्राईवेट स्प से अन्तरंग आशीर्वाद देने वाले तो बहुत हैं। परंतु इतना बड़ा विवादास्पद कोर्ट के मुद्दे को समाज के सामने सफल करना यह हमारी दृष्टि से अलौकिक कार्य हैं। ऐसा भगीरथ कार्य करना वही विचार कर सकता है जिसे अपने में आत्मविश्वास हो। उसे श्रीजी महाराज के प्रति अटूट श्रद्धा होगी है ऐसे श्रीजी महाराज के अपर स्वस्थ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सिवा कौन है जो विचार कर सकता है। ऐसा ही अद्‌भुत कार्य आचार्य महाराजश्रीने किया है। जिस में सम्पूर्ण चमत्कार ही चमत्कार दिखाई देता है। यह प्रसंग श्रद्धा का विषय हैं या परचा (चमत्कार) का विषय है यह निश्चित करना अति कठिन है। कारण यह कि इस कलिकाल में ऐसा विशेष चमत्कारिक उदाहरण और भी हो सकता है क्या ?

षष्ठी पूर्ति महोत्सव में खजानची के स्प में प.भ. रसिकभाई दयालजीभाई सोनी (सीतापुरवाले - माणेक ज्वोलर्स) की प.पू. भावी आचार्य लालाजी महाराजश्रीने नियुक्ति की थी। उन्हें अंतिम तीन महिने तक अपने व्यवहार का काम छोडकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और श्रीहरि को प्रसन्न रखने के लिए निरंतर सेवा में जुड़ गए थे। (महंत स्वामी)

कायमी सभ्यो का सौजन्य

प.भ. प्रकाशकुमार अमृतलाल पटेल (गवाडावाला) अभी - बापुनगर अहमदाबाद की तरफ से श्री स्वामिनारायण अंक के कायमी ११ सभ्यों को रु १००- सौजन्य प्रति श्री गोरधनभाई सीतापरा द्वारा दिया गया है।

सत्संग

- नटवरलाल बाजीदास पटेल (विहारवाला)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वीलोक में मनुष्य अवतार धारण करके अनेक जीवों को मोक्ष दिया। जीव का मोक्ष करना यह कोई साधारण बात नहीं है। श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने भक्तों का आत्यंतिक कल्याण करने के लिए स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना की और खुद शिक्षापत्री, वचनामृत जैसे अत्यंत उपयोगी धर्मशास्त्रो की रचना की और अपने एकांतिक संतो द्वारा सत् धर्मकी स्थापना की और अपने संप्रदाय के आश्रितजन सत्संगी के नाम से प्रसिद्ध हुए। तो सत्संग का क्या अर्थ है ? वह हमें जानना चाहिए। श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में भी कहा है कि श्री कृष्ण भगवान की भक्ति और सत्संग बिना तो विद्वान् भी अधोगति को प्राप्त करता है। (शि.श्लोक नं. ११४) इसलिए विद्यादिक गुणवाले को उसका परम कर्तव्य क्या है - तो. -

श्रीकृष्ण भगवान के प्रति भक्ति और सत्संग करना चाहिए। श्री स्वामिनारायण भगवान अपने सत्संग का कितना महत्व है वह सत्त शास्त्रों द्वारा समझाया है। प्रत्यक्ष परमात्मा के एकांतिक संत और भक्तों की पहचान और उनका माहात्म्य सत्संग से स्वस्म समझ में आता है। सत्संग तो सर्व साधना का फलस्म है। और आत्यंतिक कल्याण की प्राप्ति करवाने वाले है। वह सत्संग प्रत्यक्ष परमात्मा को वश करने का अमोध साधन है। भगवान श्री कृष्णचन्द्र कहते है :

अष्टांग योग, सांख्यविचार, धर्म, स्वाध्याय, तप, त्याग, व्रत, यम, नियम, यज्ञ, वेदाध्ययन, मंत्र, तीर्थ और जप आदि करके जैसे वश नहि होते वैसे इस संस्कार की आसक्ति को टालने वाले "सत्संग" द्वारा वश होता है। (श्रीमद् भग. स. १२ श्लोक १-२)

सत्संग का इतना बड़ा गौरव है तो सत्संग क्या ? इसका विचार हमें अवश्य करना चाहिए। सत्संग का अर्थ केवल अच्छे मनुष्यों का अथवा नीतिमान या गुणवान्, धार्मिक, मनुष्य का संग ऐसा भी नहीं .....

सत्त् शब्द से सत्य स्वरुप ऐसा प्रकट प्रमाण परब्रह्म परमात्मा। समझना चाहिए तथा इन परमात्मा की दृढ उपासना वाले आश्रित साधु पुस्षोको भी समझाना चाहिए। क्योंकि ऐसे साधु पुरुषों का सत् पुरुष भी कहा गया है। सत् शब्द से सत्य स्वस्म परमात्मा को सत्य स्वस्म साधुपुरुषों की वाणीस्म भागवत धर्म इन तीन के स्वस्म का निस्मण करनेवाले उस शास्त्र के इस चार सत्त् स्वस्म का संग ही सत्संग कहलाता है। (सत्संगिजीवन प्र. ३ अ. २२ शल्क-८) उसके अलावा : देश, काल, क्रिया, शास्त्र, ध्यान, दीक्षा और मंत्र यह सात जिन सत् शब्द से कहे गए हो अर्थात् सदैव देश, सत्काल, सत्क्रिया, इत्यादि सत्त् का संग वह भी श्रेष्ठ मुर्तिओं के सत्संग द्वारा मानित है।

सत्संगिजीवन प्रकरण-३ अध्याय-२६ श्लोक-२७

वचनामृत में श्री स्वामिनारायण भगवानने सत्संग की व्याख्या सूत्र भाषा में ऐसे कही है सत्य स्वरुप ऐसा है जो अपने आत्मा तथा सत्त् स्वस्म जैसे परमात्मा का संग वही सत्संग कहा गया है।

प्रत्यक्ष परमात्मा या प्रत्यक्ष भगवान के संत मुमुक्षु को मिले तो उसे ऐसा समझना कि अब वह अत्यंत कल्याण (मोक्ष) के मार्ग पर है। तब मेरा मोक्ष तो होना ही है। जिस तरह रेल्वे गाड़ी या विमान मे नियमानुसार टिकिट का पासपोर्ट लेकर बैठा होतो चलने के बाद कोई पूछे कि,

"वह भाई कहाँ गए।" तो वह दृढ़वा से कहेगा कि मुंबई, दिल्ही, इग्लेन्ड, अमेरिका, जिस नियत स्थळ पर जाना है उस स्थल पर गए। जब कि वह गाडी या प्लेन दूसरे स्टेशन या

एरपोर्ट भी न पहुंचे हो क्योंकि वह टिकिट या पासपोर्ट लेकर बैठें है । इसलिए उन्हे विश्वास है कि गाड़ी या प्लेन चला तो नियत स्थल पर अब वे पहुंचने ही वाले है । उसी तरह प्रत्यक्ष भगवान या उनके संत मिले और उनकी पहचान हो तो उनके आज्ञा अनुसार करना पड़ता है । दृढ वर्तमान निभाए तो समझना कि मोक्ष होना ही है फिर जैसी मुमुक्षु की श्रद्धा । अगर मंद श्रध्धा हो तो जन्मांतर पर आत्यंतिक कल्याण होगा । और तीव श्रद्धा हो तो सद्य साधन समाप्ति होगी । इसलिए उसे इस जन्म में मोक्ष होगा।

श्री स्वामिनारायण भगवान वचनामृत में कहते हैं कि हमें तो ऐसा लगता है कि जो पूर्व जन्म का संस्कार या सत्संग होगा वही सत् पुस्त्रों के योग से करके होगा । और आजभी वो संस्कार या सत्संग हो रहा है वह सत् पुरुषों की वजह से ही रो रहा है । इसलिए ऐसे सत्तपुस्त्र का संग प्राप्त हो तो भी जिसे ऐसे जैसा वैसा नही समझमें आता सत्त पुस्त्र का संग प्राप्त हो तो भी जिसे जैसे है वैसा नहीं समझ में आता । क्यों ? जैसी बद्रिकाश्रम में सभा है । उससे भी में सत्संग की सभा को ज्यादा मानता हूँ । और सभी हरिभक्तों का अतिशय प्रकाश युक्त देखतां हूँ । उसमें अगर थोड़ा भी मिथ्या कहूँ तो इस संत सभा की कसम है । कसम क्यों खानी पड़े ? ब्रह्मादिक को भी दुर्बळ हो ऐसे सत्संग में परमात्मा के अलावा जिसे दूसरे किसी में हेत रहता है उसका यह कारण है कि जो जैसी है जीव की परोक्ष प्रतीति है । ऐसी प्रत्यक्ष दृढ़ स्त्र से नहीं होती । श्रुति में कहा है कि "जैसा परोक्ष देव के बारे में जीवको प्रतीत होता है वैसा ही प्रत्यक्ष गुरुस्त्र हरि के बारे में होता तो जितने अर्थ प्राप्त होने हो उतने सभी अर्थ उसे प्राप्त होते हैं और जब ऐसा संत समागम प्राप्त हो तो देह छोडकर जिसे प्राप्त करना वह तो संदेह से भी मिलें है । इसलिए जिसे परम पद कहतें है - मोक्ष कहते हैं उसे तो संदेह ही प्राप्त किया है । (वचनामृत गढडा है । प्र.-२)

राम-कृष्ण-नरनारायण, वासुदेव नारायण और वही धाम के मुक्तो ज्यादा पूर्ण पुस्त्रोत्तम नारायण के मुक्त अधिक है । अक्षरधाम में नारायण के मुक्त अधिक हैं। अक्षरधाम में जैसे अपने मुक्त अतिशय प्रकाशयुक्त हैं । जैसे अक्षरधाम में मुक्त सहित सभा है वैसी ही इस पृथ्वी पर भी दिव्य सभा है । ऐसा कहकर श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने अपने सर्व अवतार का कारण सर्वोपरि अवतारीतता को प्रतिपादित किया है। ऐसा अलौकिक माहात्म्य सत्संग से ही समझमें आता है ।

है भक्तों ! अपना तो अहो भाग्य मानने चाहिए कि हमें एसे देव का भी दुर्लभ ऐसा सत्संग प्राप्त हुआ है। तो यह लाभ और शुभ मुहूर्त में हमें अपना आत्म कर लेना चाहिए । भगवान को जानकर अखंड स्मृति भगवान की मूर्ति में रखकर क्षण-क्षण भगवान को अंतर में याद करना यही हमारा लक्ष होना चाहिए ।

(अनुसंधान पेईज नंबर १८ का)

पर भी महाराज चित्त से पट्ट हो गये ।

हरिभक्तों को आनंद हुआ । दबाने वाले उदास हो गये । पुनः पुनः प्रयास करने पर भ सफलता नहीं मिली ।

बार-बार कहने लगे अरे ! महाराज इसबार तो आपकी ताकत नहीं है कि आप हिल सकें । किसी को ख्याल भी नहीं आवे ऐसा महाराज पट से चित हो गये । यह सभी आंखो से देखा हुआ तथा स्वयं का अनुभव अहंकार को दूर कर दिया । मनमें से आसुरी वृत्ति चली गयी । सभी का हृदय निर्मल हो गया । सभी लोग महाराज को नतमस्तक प्रणाम किया ।

हे प्रभु ? हम हारे । आप ईश्वर हैं । साधारण नहीं क्योंकि ईश्वर का ईश्वरत्व साथ ही रहता है । मेरा अहंकार चला गया। भगवान के स्त्र में सुना था लेकिन आज प्रत्यक्ष अनुभव हो गया ।

श्रीजी महाराज के मुख पर स्मित की रेखा हुई । और उन चारों के पूर्व वृत्तान्त का मानो स्मरण करते हुए करुणा भाव से देखने लगे ।

अस्थि बिना का देह

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाटक



रात दिन खेंगार सिंधव को एक ही विचार आता है । ऐसा हो सकता है - क्या ? यदि हो तो महान् आश्चर्य कहा जा सकता है । ऐसा तो कभी देखा भी नहीं सुना भी नहीं । लेकिन नज़र से देखने वाला खुद अनुभव किया इसलिये झूठा तो हो ही नहीं सकता । खेंगार सिंधव का मन अचम्भा में से बाहर आता ही नहीं । दिन भर की प्रवृत्ति के बाद बाहर की गली में सोता है । आकाश की तरफ देखता रहता है । हाथ में माला फेरता जाता । इसमें हरिस्मरण को हटा दे ऐसा विचार मानस पटल पर छा जाता है । स्याभाई कहता है कि ऐसा हो तो मनुष्य काम ही नहीं करेगा । लेकिन महाराज को तो मैंने काम करते देखा है । फूल सूंघते, माला फेरते, रसोई करते, भोजन करते, पंक्ति में भोजन परोसते, धोड़े पर चढ़ते भक्तों को गले से लगाते, ऐसे सभी कार्य मजबूत हाथ के बिना सम्भव कैसे ?

लेकिन वह बात कौन थी ? जो स्या बाईने खेंगार सिंधव को बताई थी और उससे प्रभावित हो गया था ।

खेंगार सिंधव खोलडियाद में रहता था । स्याभाई क्षत्रिय भावनगर में रहता था । दोनों श्रीजी महाराज के कृपापात्र थे । प्रायः एक दूसरे से मिलते रहते । सत्संग का समाचार पूछते । श्रीहरि तथा संतो के दर्शन की बात करते । एक समय दोंनो किसी प्रसंगपर मिले तब स्याभाईने बताया ।

खेंगारभाई ? आज तो आपके आश्चर्य की अवधि नहीं रहेगी । ऐसी बात करनेवाला हूँ । सुनो - एक समय महाराज के साथ था । बगडा की पाट पर चला चा रहा था । वहाँ भावनगर का दीवान आया ऐसा मुझे संकेत मिला । महाराज तो मनुष्य की तरह डरने लगे । हमें कहे चलो इस जार के खेंत में छिप जांय ! इतने में महाराज ने कहा हमारा हाथ दुःख रहा है । मेरा हाथ दबाओ । मैं उनका हाथ दबाने लगा । उनका हाथ मुलायम लग रहा था । इस लिये धीरे-धीरे दबा रहा था । महाराज ने कहा जोर से दबाओ तो मैंने कहा जोर से दबायेंगे तो हड्डी टूट जायेगी । तब महाराज ने कहा नहीं । जोर से दबाओ और में दबाने लगा । जितने ताकात थी उतनी ताकात से दबाया और जैसे धोती को निचोते है उस तरह हाथ से महाराज के हाथ को खूब बल दिया । मैं तो अवाक् रह गया मुझे लगा कि महाराज के हाथ में हड्डी ही नहीं है । आप ही बतावें हड्डी के बिना हाथ होता है क्या ! ऐसा अद्‌भुत अनुभव मुझे हुआ । लेकिन ऐसा हाथ साधारण मनुष्य का नहीं होता है किसी अलौकिक व्यक्ति का हो सकता है । बेहद सुख देने वाला तथा चमत्कारी अनुभव जिन्दगी में प्रथमबार हुआ था ।

बड़ी बात किया आपने ! विश्वास नहीं हो रहा है । बस उसी समय में चमत्कारिक प्रसंग मन बस

गया है। हड्डी बिना हाथ से काम कैसे हो सकता है ? जब हाथ में हड्डी नहीं है तो उसके साथ रहनेवाले अन्य अंग माथा, पेट, पैर इसमें भी नहीं हो सकता ? इसका प्रत्यक्ष अनुभव करने एकबार भगत गढड़ा गया । श्रीजी महाराज के एक एक अंग का सूक्ष्म दर्शन किया। लेकिन वे तो सामान्य मनुष्य जैसे दिखाई दे रहे थे ।

श्रीहरि भक्त कल्पद्रुम हैं भक्तवत्सल हैं। भक्तों के संकल्प पूर्ण करते हैं । मनोरथ सिद्ध करने का अवसर मिल गया । महाराज अक्षर दालान में करवट में आराम कर रहे थे। उसी समय खेंगारभगत पहुंच गया। श्रीजी महाराज का पैर दाबने गला। परीक्षण करने के लिए बीच-बीच में अंगुली गोदता जा रहा था।

पटेल हमारे पैर में क्या देख रहे हो ? श्रीजी महाराज ने पूछा ।

महाराज ? हमें एकबार भावनगरवाला स्याभाई ने बताया था कि महाराज की शरीर में हड्डी नहीं है। वही मैं देख रहा हूँ। हम देख रहे हैं कि पैर में हड्डी है या नहीं। हड्डी बिना देह होती है क्या ? महाराज ? पैर में तो हड्डी नहीं है। ऐसा हो सकता है क्या ? महाराजने कहा । महाराज ? हड्डी तो सुन्दर है रेशमजैसी है लेकिन स्ई जैसी मुलायम है। हड्डी तो है ही नहीं ।

मेरे हाथ की हड्डी देखो इसमें तो होगी । खेंगार सिंदळ ने देखा तो हाथ में भी हड्डी नहीं थे। हमारा माथा देखो इसमें तो होगी । अच्छी तरह देखा तो उसमें भी नहीं थी । बाद बोले कि प्रभो ! आपकी शरीर दिव्य है, अलौकिक है। इसमें पंचमहाभूत की कल्पना करना ही बड़ी भूल है।

खेंगारभाई ? प्रत्यक्ष भगवान की जो मूर्ति तथा मायिक जो आकार दोनों में बहुत फर्क है। लेकिन अज्ञानी लोग दोनों को एक जैसा ही मानते है। ऐसा श्रीहरिने कहा ।

हाँ बापा सच्ची बात है। दोनों अलग पदार्थ है । श्रीहरि एकबार जामनगर के लाखाणी गाँव में पधारे । सुथार वीरजी के घर स्के और सायंकाल नींब वृक्ष के नीचे बैठकर सभी बात कर रहे थे । बाद में सायंकालीन आरती करके कांथडजी के घर भोजन करने गये । भोजन करके आये तो दक्षिण कुक्षि लेट गये । वीरजीभाई पैर दबाने लगा । वहाँ दरबार कांथडजी आया और बात में यह कहा कि महाराज ? हमारे गाँव में एक गरासिया का कुटुंब है । उसमें चार भाई हैं, वे भीम जैसे बलशाली है। उनसे शरीर दबाया जाय तो उच्छा होगा । महाराज ने कहा ठीक है उन्हे बुलवालीजिए । उनकी ताकात तो देखी जाय ।

वीरजी सुथार बुलाने गया । दरबारी मेरे घर मेरे गुरुस्वामिनारायण भगवान आये हैं। उनके पैर दबाते हुए आपकी बात निकली कांथडजीने आपकी प्रशंसा की है कि वह बहुत बलशाली है। तो महाराज ने कहा कि उन्हे बुला लाइये । क्या आप शरीर कचर देंगे ? यह सुनकर चारो भाई प्रसन्न हो गये और अपने बलका प्रदर्शन करने का अवसर आ गया है। यह समझकर बडे अभिमान के साथ चल दियो । अभिमान किसी को भी गिरा देता है। हाथी नदी तालाब का पानी कितना अधिक पीता है। लेकिन आवाज नहीं करता । जबकि मेढक गद्ढे का पानी पीकर कितनी टर-टर करता है। अभिमान मनुष्य को शैतान बना देता है। नम्रता मनुष्य को साधु बनाती है ।

वीरजी सुथार के साथ सभी महाराज के पास आये । महाराज ने कहा कि जिसकी बात कर रहे थे यही सब हैं। हाँ महाराज ? तो आप सभी लोग मेरी शरीर को ऐसा दबाइये कि शरीर हिलडुल न सके । श्रीहरि नें उनके अहंकार को चैलंज दिया ।

महाराज ? आप की हड्डी मसल डालेगें। आप माड़की पर चढने लायक नहीं रह जायेगे । यह पहले बता दे रहे हैं। बाद में मत कहिएगा ।

इसकी चिंता मत करो । तुम चारों मेरी शरीर को दबा कर रखो फिर देखो कि हम घूम जाते हैं यै नहीं ।

अरे छोटे ? चलो महाराज की शरीर ऐसी दबाई जाय कि ये फिर ही न सकें ।

एक ने पैर, दूसरेनें कमर, तीसरे नें छाती, चौथेने मस्तक पकड कर रखा था ।

महाराज ने कहा जोर से दबा रखना फिरने नहीं देना। अरे महाराज ? एक अंग भी हिल डुलने नहीं देंगे । आश्चर्य तो यह कि चारों के पकड़ने

(अनुसंधान पेईज नंबर १६ पर)

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अलौकिक बात

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

एक राजा का मंत्री बहतु ही धार्मिक था। नित्य प्रातः स्नान करके भगवान की पूजा-पाठ करने के बाद राजदरबार में आता। उसमें एक दिन पूजा में थोड़ी देर हो गई। इसलिए मंत्री को राजसभा में पहुँचने में थोडी देर हो गई। इसलिए राजा क्रोधित हुए और देर से आने का कारण पूछा, तब मंत्रीने उचित कारण बताया। तब राजाने कहा कि में पूछुं उस प्रश्न का उत्तर दीजिए नहीं तो आपको सजा दूंगा।

राजाने मंत्री से प्रश्न पूछे कि "भगवान कहाँ बैठते है ? किस दिशा में मुख रखतें है ? और वे क्या करते है ?" मंत्री चिंतित हो गया "मैं कल उत्तर दूगा।" ऐसा कह कर वह घर गया। परंतु बेचैनी की वजह से वह दुःखी हुआ। ऐसे में उसके घर एक संतमहात्मा आए। उन्हों ने मंत्री से उसके दुःख का कारण पूछा। मंत्रीने कारण कहा। तब संतने कहा, "आप चिंता मत किजिए। उसका उत्तर मैं ही राजा को दूंगा।" दूसरे दिन संत कचहरी में गए और कहा, "ऐसा उत्तर तो हमारे लिए सामान्य है। परंतु उससे पहले मुझे योग्य स्थान मिलना चाहिए। वक्ता से नीचे श्रोता को बैठना चाहिए यह एक नीति है।" राजाने ऐसा किया। उस संत को गादी पर बैठाया और खुद नीचे बैठे।

फिर भगवान कहाँ रहते है ? इस प्रश्न का खुलासा मांगा। तब इस संतने दूध मंगवाया और पूछा कि "इस में मखन किस जगह पर है ?" तब राजाने कहा कि - "सर्वत्र है" उस तरह भगवान भी सर्वत्र है। दहीं को मथकर मखन निकाला जाता है उसी तरह भक्त हृदय में मंथन कर के प्रभु को प्रगट करते हैं।

"भगवान किस तरफ मुख रखते है ?" ऐसा दूसरा प्रश्न, तब संतने दीया मंगवाया और पूछा इस दीये का मुख किस तरह है ?" राजाने कहा - "सर्वत्र।" तब संत बोले कि "उसी तरह भगवान भी सभी दिशाओं में प्रकाश देते हैं।

"भगवान क्या करते है ?" ऐसे तीसरे प्रश्न पूछने पर संत ने कहा कि "आप वजीर की जगह बैठिए और वजीर आपकी जगह पर बैठे।" तब राजाने वैसा ही किया। तब संत बोले कि - "जिस तरह आपकी बदली मैंने कि उसी तरह भगवान मनुष्य के कर्म अनुसार राजा कों रंग और रंक को राजा बनातें हैं।" राजा संत के उत्तरों से अति प्रसन्न हुए और उन्हें योग्य मानपान देकर विदाय दी।

प्यारे मित्रो ! इस बात को पढ़कर आपको ख्याल तो है कि भगवान तो सर्वत्र है। और जो कुछ भी होता है वह भगवान की ईच्छा से ही होता है। यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए। और इसमें भी अपने लिए तो अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगावन ने डंका बजाकर कहा है कि देव आचार्य, संत और शास्त्र इस चार स्वरूप में मैं अखंड रहा हूँ। इसलिए जब हम अपने मंदिर में दर्शन करने जाए तब ऐसा भाव रखकर दर्शन करना चाहिए कि प्रत्यक्ष भगवान हमारे सामने खड़े है। तो भगवान अपनी प्रार्थना जरुर सुनेगे।

अहमदाबाद मंदिर द्वारा फूल स्केप चोपडा तथा नोटबुक का प्रकाश एवं राहत दर पर वितरण

शहर तथा गाँवो के हरिभक्तो को जानकारी होकि प्रतिवर्ष की तरह इस वर्षकी प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से अपने कालुपुर मंदिर की तरफ से विधार्थियों के लिये फूल स्केप नोटबुक सुन्दर क्वालिटी के पेपर में मल्टीकलर टाइटल के साथ प्रकाशन किया गया है। जिसका राहत दर पर वितरण चालू है। इस अवशर का लाभ सभी विधार्थी उठा सकते हैं।

प्राप्तिस्थान : साहित्यकेन्द्र, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर, अहमदाबाद

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के चंदन के वस्त्रों के दर्शन

अहमदाबाद नगर में विराजमान सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव को वैशाख सुद -३ अक्षय तृतीया के दिन से नित्य सुंदर मलयगिरि चंदन के वस्त्र श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरनंदजी और उनके मंडलने बहुत ही श्रद्धा भावसे संत हरिभक्ता को दर्शन का अलौकिक लाभ दिया । अखिल ब्रह्मांड के नाथ समस्त जीव-प्राणी मात्र को स्वयं तप करके सुख दे रहें है । ऐसे दिव्य अलौकिक दर्शन भाग्यशाली पुण्यशाली और भगवद भक्तों को ही होता है । इस शहर में लाखो मनुष्य रहतें हैं । परंतु सभी के भाग्य में दर्शन नहीं होता । इसलिए हम सभी ने ऐसे दर्शन किए जिस से सदैव यह स्वस्थ-मूर्ति का चिंतन जीवन में उतरे और कल्याण निश्चय ही हो ।

बहुत ही सेवाभावी हरिभक्तों ने अपनी तरफ से देव को चंदन के वस्त्रो का यजमान बनकर सभी को दर्शन का लाभ दिया है । और अंतिम में श्रीहरि का धर्मकुल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का समस्त परिवार सभी पर अति प्रसन्न हुए थे । जो हमारा बडा भाग्य है ।

- स्वामी धर्मप्रकाशदास

जेतलपुर मंदिर के १७८ वा पाटोत्सव धामधूमसे मनाया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान ने जेतलपुर धाम में स्वहस्त से स्थापित किए हुए सर्वोपरि श्री रेवती बळदेवजी, हरिकृष्ण महाराज का १७८ वा पाटोत्सव महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के उत्साही व्यवहार कुशल महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा महंतश्री के.पी. स्वामी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से खाखरीया टप्पा के अभी के अहमदाबाद मेमनगर निवासी प.भ. गंगारामभाई महादेवभाई पटेल परिवार के यदमान पद पर बहुत ही धामधूम से मनाया गया ।

श्री स्वामिनारायण

प्रात ६-३० बजे यजमान परिवार के आमंत्रण से श्रीहरि के तीन अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री, और प.पू. बाल लालजी महाराजश्री इस तरह तीन-तीन स्वरुपों के वरद् हस्त से सभी के संकल्प मनोरथ करते हुए देवाधिदेवश्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज महाभिषेक वेदविधिसर षोडशोपचार विधि से संपन्न हुआ । हजारों भकक्तजनोंने दर्शन का दिव्य लाभ लिया था । ठाकुरजी के शिखर पर का सुवर्ण कलश सीजन की वजह से श्याम हो गया जिसकी सेवा नारायणनगर के प.भ. दासकाका और उनके परिवार के मुख्य यजमान बनकर और अन्य दूसरें हरिभक्तो ने भी उसमें लाभ लिया था । सुवर्ण से कलश को पुनः बना कर सुंदर बनाया था । और उसका पूजन प.पू. महाराजश्री ने किया था । प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ सांनिध्य में देश देशावर से आए हुए संतो ने अपनी भावना व्यक्त की थी । अंतिम में प.पू. महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद दिए थे ।

सभा में जेतलपुर ग्राम पंचायत के सरपंचश्री, तथा ग्राम पंचायत के सभी सभ्यश्री ने तथा गॉव के आगेवानोने मंदिर के सामने बस स्टेन्ड के पीछे भव्य ऐतिहासिक प्रसादी के किल्ले पर तथा जिसमें श्रीहरि के साथ अनेक संतोने कईबार स्नान किया है । ऐस दिव्य प्रसादी का देव सरोवर ९९ वर्ष के लिखकर देकर एक उमदा तथा उदाहरणीय सेवा की । उन सभी पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिए । ऐसे कामो में पूज्य पी.पी. स्वामी और पूज्य आत्मप्रकाशदासजी स्वामी की दीर्धदृष्टि की तो कोई बात ही नहीं हो सकती ।

इस कार्य को त्वरितता से पूर्ण करने की जवाबदारी पूज्य महाराजश्रीने पू. पी.पी. स्वामी तथा पू. महंत स्वामी को सौंपी है । यह संकल्प सर्वोपरि बलदेवजी महाराज त्वरितता में परिपूर्ण करें और श्रध्धालु उदार हरिभक्तों का सहकार सहयोग से इस स्थल का बहुत ही सुंदर विकास हो ऐसी सभीने देव को प्रार्थना की थी ।

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविधालय के विधार्थी, संत-पार्षदो और ब्राह्मण बटुकोंने वेद मंत्रोच्चार करके सबका उत्साह बढाया था । स्वामी के मार्गदर्शन से संत मंडल और स्टाफने सुंदर सेवा प्रदान की थी ।

- पूजारी स्वामी व्रजवल्लभदास

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल जेतलपुरधाम रजत जयंती समारोह मनाया गया

जेतलपुर मंदिर में महंत शास्त्री स्वामी नरनारायण दासजी ने सन् १९७८ में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे श्री नरनारायणदेव के हस्तगत् सर्व प्रथम गुरुकुल की स्थापना की, संस्थापक पू. शास्त्री स्वामी के अक्षरवास के बाद पू. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी ने गुरुकुल की बहुत ही प्रगति की । उसमें २५ वर्ष के समय दरम्यान भव्य छात्रालय की संख्या (५००) की सुविधा प्रार्थना मंदिर, स्कूल, होस्पिटल गौशाला, पी.टी.सी. कॉलेज में कुल मिलाकर विधार्थीओ को लाभ मिलता है । ता. २२-२३ मई २००४ दो दिन रजत जयंती समारोह रखा गया था । ता. २२ मई के दिन गुरुकुल के पूर्व विधार्थीओं का संमेलन रखा गया था । कुल २५०० विधार्थीओंने गुरुकुल में संस्कार के साथ शिक्षण पाया है । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर पूर्व विधार्थी संमेलन हुआ था । जिसमें पूर्व मुख्य मंत्री माननीय केशुभाई पटेल तथा माननीय भूपेन्द्रसिंह चुडासमा (कृषि मंत्री), श्री भाविन शेठ धारासभ्य ऐलीसब्रीज, बाबुभाई पटेल धारासभ्य दसक्रोई तथा संत महानुभाव उपस्थित हुए थे । २३ मई सुबह ९-०० बजे गुरुकुल के पॉचवे सोचार श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड कोलेज का उद्घाटन प.पू. भावि आचार्य लालजी १०८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष

स्थान पर उधोगपतिश्री नटुभाई एन. पटेल मेघमणी केमिकल्स लि. माननीय कौशिकभाई पटेल, माननीय सुरेन्द्रभाई पटेल, चेरमेंनश्री औडा तथा मुख्य यजमान प.भ. जीगर पटेल तथा अहमदाबाद स्कीम कमिटी के सभ्य अग्रगण्य हरिभक्तों की संख्या पांच हजार की थी। गुरुकुल के भूतपूर्व विधार्थीओने अपने धर्मसंस्कार से अभी तक उन्होंने जीवन में उपयोगी प्रवचन किए थे। प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद में गुरुकुल के संत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पी.पी. स्वामी के संत मंडल के संतो की तरफ से जो सत्संग में सेवा मिलती हां तथा अहमदाबाद मंदिर के सम में दश वर्ष तक सेवा दी उसकी प्रशंसा की। नूतन निर्मित श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज २००४ से प्रारंभ होगी। दाताश्रीको सन्मानित किया गया।

लि. नारायणस्वामी महेसाणा, महंत के.पी. स्वामी जेतलपुर

चराडा मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव

उत्तर गुजरात के माणसा के पास के चराडा गाँव में १०० वर्ष से भी पुराना श्री स्वामिनारायण मंदिर है। जो कालान्तर से जीर्ण था। इसलिए नूतन मंदिर के निर्माण के लिए जेतलपुर मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू. पी.पी. स्वामी के नेतृत्व के नीचे थोडे ही समय में ही तैयार कियाा गया है। ऐसे सुंदर नयन रम्य मंदिर में ता. १७-४-२००४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद हस्त से यहाँ मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा धामधूम से संपन्न हुई थी।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में श्रीमद भागवत दशम स्कंध त्रिदिनात्मक पारायण साधु भक्तिनंदनदास गुरुपी.पी. स्वामीने वक्तापद पर कथामृत पान करवाया था। तथा त्रिदिनात्मक विष्णुयाग रखा गया था। और हरोज रात को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा विविध कार्यक्रम होतें थे।

जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी के दादागुरु प.पू. अ.नि. कृष्णकेशवदासजी स्वामी के पूर्वाश्रम का गाँव होने की वजह से अपने शिष्य मंडल द्वारा मंदिर का निर्माण तथा मूर्ति प्रतिष्ठा विधि का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर पू. श्याम चरण स्वामी, शा. ईश्वर स्वामी आदि संत मंडलने सेवा सहयोग देकर प्रसंग को शोभित किया था।

हरिभक्तो में प.भ. ईश्वरभाई पटेलने माणसा सुंदर मार्ददर्शन दिया था। और प.भ. रमणभाई भावसार तथा प.भ. प्रविणभाई पटेल आदिने अग्रण्य हरिभक्तो की सुंदर सेवा की थी।

- के.पी. स्वामी जेतलपुर महंत

उभडा गाँव में मंदिर का निर्माण

सुरेन्द्रनगर जिल्ला के बडे उभडा गाँव में भूकंप ग्रस्त हरिमंदिर का पुनः निर्माण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्ददर्शन प्रेरणा से किया गया है।

४० वर्ष पुराने मंदिर की मूर्तिओं को यथावत रखकर सुंदर नयन रम्य मंदिर बनाया गया है। ता. २३-४-२००४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री बडे उभडा गाँव पधारे तब संत हरिभक्तों ने धामधुम से स्वागत किया था। उसके बाद प.पू. महाराजश्रीने मंदिर में ठाकोरजी की आरती की थी। इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था। जिसके वक्ता के सम में शास्त्री स्वामी ईश्वरजीवनदासजी गुरु पी.पी. स्वामीने कथामृत पान करवाया था।

यह मंदिर अ.नि. शास्त्री स्वामी नरनारायणदासजीने ४० वर्ष पहले बनाया तथा सत्संग किया था। श्री तेजेन्द्रप्रसादजी विधालय का निर्माण अहमदाबाद, मंदिर द्धारा भूकंप के पुनः निर्माण के समय किया गया। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने नूतन स्कूल की मुलाकात की थी।

- पूजारी व्रजवल्लभदास - जेतलपुर

मथुरा मंदिर में पाटोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से और महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणासे प.भ. मगनलाल लीलाधर सोनी के तरफ से ठाकोरजी का पाटोत्सव वैशाख सुद-१०, ता. ३०-४-२००४ के दिन श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज को शोडषोपचार विधि से अभिषेक करके धामधूम से संपन्न हुआ. उसके बाद इन्नकूट दर्शन और सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिसमें महंत शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी ने यजमान परिवार की सेवा की प्रसन्ना की और आशीर्वाद दिए। दिल्ही आदि से हरिभक्त दर्शन करने आए थे। पू. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (प्रयाग) और पूजारी स्वा. सर्वेश्वरदासजी ने अच्छी सेवा की थी। *- कोठारी नरेन्द्रभगत*

नारायणघाट मंदिर में संपन्न हुआ भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादत्मक आज्ञा से तथा स.गु. महंतस्वामी देवप्रसादजी के प्रेरणा से प.भ. रमणभाई डाह्याभाई पटेल (अंबापुरवाले) परिवार के यजमान पद पर स.गु. महंत शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजीके वक्ता पद पर ता. १८-४-०४ से ता. २४-४-०४ वर्यन्त श्रीमद् भादवत सप्ताह पारायण मंदिर में सुंदरता से संपन्न हुई। संहितापाठ के वक्तापद पर स.गु. शास्त्री स्वामी विजयप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा) थे।

कथा प्रारंभ में पोथीयात्रा तथा कथा अंतर्गत श्रीकृष्ण जन्मोत्सव और रुक्ष्मणी विवाह आदि प्रसंगो को बहुत थी उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस प्रसंग पर अनेक धामों से पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया। हजारों हरिभक्तों ने कथा-श्रवण करके दिव्यानंद लिया था। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर यजमान परिवार तथा समग्र सभा को आशीर्वाद दिया था। *- प्रति. गोरधनभाई*

नरोडा सत्संग मंडप का गौरव

प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा - आशीर्वाद से नरोडा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल में मूल सेवाभावी प.भ. अरविंदभाई बी. पटेल के चि.. नयन ने इस वर्ष लिए गये १२ सायन्स में मेरीट ९४.४४ मार्कस के साथ उत्तीर्ण हुआ है । प.पू. लालजी महाराजश्रीने उनकी उतरोत्तर प्रगति के लिए उन्हें आशीर्वाद दिये ।

बदपुरा मंदिर का रजत जयंती महोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर गुरुकुल) तथा स्वा. सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से यहाँ बदपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव (रजत जयंती) तथा बहनो के मूतन मंदिर का पाटोत्सव ता. २७-१-०४ के दिन धामधूम से संपन्न हुआ । इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद सत्संगिजीवन पंचाह पारायण प.भ. चौधरी महेन्द्रभाई रामाभाई हलबाभाई के यजमानपद पर और शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी तथा शा. स्वामी. विश्वप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर और संहितापाठ में स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी बिराजे थे । महापुजा का भी आयोजन किया था, जिसमें यजमान चौधरी गोवाभाई जोराभाई और सहयजमानो ने भाग लिया था । संहितापाठ के यजमान चौधरी वल्लभभाई बेचरभाई थे ।

ता. २६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यहाँ पधारे तब गाँव के भाविक भक्तोने बहुत धूमधाम से महाराजश्री का स्वागत किया । उसके बाद प.पू. महाराजश्री मंदिर में पधारे थे । और ठाकुरजी की आरती उतारकर सुंदर दिव्य लाभ हरिभक्तो को दिया था । प्रासंगिक सभा में पधारकर चौधरी समाज के सत्संग की प्रसंशा करके आशीर्वाद दिया था ।

ता. २७-२-२००४ के दिन प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री गाँव में पधारे तब भाविक भक्तों बहुत ही धामधूम से स्वागत किया था । और वहाँ से म.पू. लालजी महाराजश्री ने दोनो मंदिरमें ठाकोरजी की आरती उतारकर सभा में पारायण की पूर्णाहुती कर आरती उतारी थी । और सभा को आशीर्वाद दिए और धुन के साथ सभा का विराम हुआ ।

- शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन फाउन्डेशन मक्तुपुर उंझा का वार्षिक महोत्सव मनाया गया ।

ता. ५-३-०४ के दिन श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन फाउन्डेशन का तृतीय वार्षिकोत्सव बहुत ही दबदबापूर्वक मनाया गया ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस प्रसंग पर खास पधारे थें । और प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वचन देते हुए कहा था कि आजादी के समय से अंग्रेजी माध्यम की तरफ धृणा से देखा जाता था । परंतु सभी क्षेत्र में उसकी जरुरत पड़ती है । और आप के समय में तो उसकी मांग है । ऐसे अपने आशीर्वचन देकर सभी पर अति प्रसन्न हुए थे । इस प्रसंग पर अनेक संत महंत श्री नारायणभाई एल. पटेल (उंझा धारासभ्य तथा चेरमेन ए.पी.एम.सी) श्री घनश्यामभाई ब्रह्मभट्ट) रोटरी क्लब के मेम्बरश्री) मक्तुपुर के सरपंच उपसरपंच, स्कूल के संचालक श्री शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.भ. जी.के.पटेल (विमल पेईन्टस महेसाणा और अहमदाबाद मंदिर स्कीम कमिटी सभ्यश्री) तथा महेसाणा के अग्रण्य महानुभाव, सुबुद्ध और स्कुल के बच्चें तथा सभी स्टाप के सभ्य सभी उपस्थित थे । सभी अपनी भावना उर्मिओं को दर्शित किया ।

स्कूल के नर्सरी से कक्षा ५ तक के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही सुंदर और प्रेरणास्म थे ।

सापावाडा मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से सापावाड़ा मंदिर के देवों का पाटोत्सव, अभिषेक वेदविधिसर से संपन्न हुआ । यह पाटोत्सव यहाँ के महंत स्वामी निलकंठस्वामी की प्रेरणा से प.भ. पटेल हिराभाई गणेशभाई परिवार ने यजमान बनकर लाभ लिया था । अहमदाबाद, जेतलपुर, छपैया, घ्रांगध्रा, मूली और लींबडी के संत इस प्रसंग पर खास पधारे थे । धारा सभ्यश्री फते सिंहजी राजगढ, श्री अरविंदभाई त्रिवेदी (लंकेश), श्री पृथ्वीराज पटेल, कलेक्टर साहेब तथा श्री एम. के. जाडेजा आदि ने पधार कर दर्शन का लाभ लिया था । समस्त सभाने प.पू. आचार्य महाराजने आशीर्वाद दिए थे ।

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल चिलोडा

श्री नरनारायणदेव संचालित श्री स्वामिनारायण गुरुकुल चिलोडा श्री स्वामिनारायण प्राथमिक शाला का पंचम वार्षिकोत्सव तथा शाला के निवृत्त अद्यापकों का अधिवेशन ता. २६-२-०४ के दिन प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम से सम्पन्न हुआ । निवृत्त होनेवाले शिक्षक रमणभाई के. पटेल तथा शाला के विधार्थी एंव आमंत्रित मेहमानोने भोजनार्थ एवं गुरुकुल के लिए २५०००-०० रुपये का दान किया । संचालक श्री स्वा. बाल स्वरुप दासजी ने सुन्दर व्यवस्था की ।

बालासिनोर मंदिर को १६३ वो पाटोत्सव सम्पन्न हुआ

श्री नरनारायणदेव ताबा का मंदिर बालासिनोर में फाल्गुन वद ९ ता. १८-३-०४ को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हस्त से मंदिर का पाटोत्सव सम्पन्न हुआ ।

इस प्रसंग पर श्रीमद सत्संगि जीवन पंचाह पारायण शा.स्वा. हरि जीवन दासजी ने किया । सभा में शा. स्वा. प्रेमस्वरुपदासजीने तथा विद्वान् संतोने प्रेरक प्रवचन किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभाको तथा यजमान नटवरलाल कोदरलाल मिस्त्री परिवार को शुभाशीर्वाद दिया । गाँव के सभी हरिभक्तों ने सेवा का लाभ लिया ।

श्री हरि प्रस्थापित धोलका मंदिरका १७७ वां पाटोत्सव सम्पन्न हुआ

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं भावी आचार्य लालजी महाराजश्री एवं पू. बाल लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. माधवदास मोहनलाल पाटडिया (हेदरावादवाला), प.भ. कांतिभाई माधवदास, अ.नि. जयन्तीभाई प.भ. प्रेमचन्द्रभाई (न्यूजर्सी) प.भ. विजयभाई (शिकागो) आदि परिवार की तरफ से वैशाख शुकूल पंचमी के दिन सर्वोपरि श्री मुरली मनोहरदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा घनश्याम महाराज को पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वरद हाथों से प्रातः ७-०० बजे संम्पन्न हुआ । सभा में महन्त स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. घनश्याम प्रकाशदासजी ने देव तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया । धामोधाम से आये विद्वान संतोने प्रेरक प्रवचन किये । सभा के यजमान परिवार को प.पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया । इस प्रसंग पर देव स्वामी (दिल्ही महंत) स्वा. हरिस्वस्मदास तथा अन्य सन्त मंडल उपस्थित रहे ।

- साधु विजयप्रकाशदास जमीयतपुरा

कणभा श्रीहरि तबीबी औषधालय का उद्घाटन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सर्वजीव हितावह श्री स्वामिनारायण गुरुकुल चेरीटेबल ट्रस्ट कणभा संचालित श्रीहरि तबीबी सारवार केन्द्र का शुभ उद्घाटन ता. २२-४-०४ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांन्धीनगर के महंत ध्यानी स्वामी ध्वारा तथा अन्य संतो की उपस्थिति में एवं नामांकित डाक्टरों तथा हरिभक्तों की उपस्थिति में आरम्भ किया गया ।इस प्रसंग सत्संग भूषणदासजीने आशीर्वाद दिया । का हार्द समझाया । और बताया कि यहाँ पर किसी भेदभाव के विना निःशुल्क सेवा दी जायेगी । यहाँ पर एक्सरे पैधालोजी, लेबोरेटरी, सोनोग्राफी इत्यादिकी सुविधा सम्पन्न की गयी है । उद्घाटन प्रसंग पर मेन ट्रस्टी स्वामीने शिक्षापत्री का आधार देकर समझाया कि प्रत्येक को माता-पिता तता रोगी की यावत जीवन सेवा करनी चाहिए । श्रीहरि की दया से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा सन्तों डक्टरों एवं हरिभक्तो के सहयोग से यह होस्पिटल तैयार हुआ है । आस पास के तथा दूर के कोई भी इस होस्पिटल का लाभ लेसकता है । इस प्रसंग पर अहमदाबाद के निष्णात डक्टरों का तथा मेडिकल स्टाफ का संमान किया गया ।

प.पू. भावी आचार्य महाराजश्री १०८ श्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने उद्घाटन के बाद गुरुकुल की मुलाकात ली थी । तथा लेबोरेटरी, क्लास, नये होस्पिटल, एक्सरे, इत्यादि का नीरीक्षण किये और खूब प्रभावित हुए । अन्त में सभी सें मिलकर आशीर्वाद दिये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

दि. ६-५-२००४ को पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोद्धार श्री स्वामिनारायण मंदिर, गांधीनगर के महंत स. ध्यानी स्वामी हरिस्वस्मदासजी द्धारा किया गया । इस मंदिर में श्री घनश्याम महाराज तथा श्री राधाकृष्ण देव का प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलों से हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में हुवा । इस अवसर पर ध्यानी स्वामी श्री हरिस्वस्मदासजी ने बताया की श्री स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर आकर जीवात्मा के अंदरकी माया का वेग कम कर मूर्ति से प्रेम कर जन्म सफल कर लेना । इस अवसर पर सुरेन्द्रनगर के स.गु. कृष्णवल्लभदास, अहमदावाद के सत्यप्रकाशदास कोटेश्वर के पी.पी. स्वामी, पेथापुर के शा. धर्म प्रवर्तक दासजी तथा बालवा के महंत भक्तवत्सलदासजी ने उद्भोदन किआ था ।

कांकरिया रामबाग में नूतन शिखरबध्ध मंदिर का खात मूहुर्त

अहमदाबाद के रामबाग जहाँ श्रीहरि ने चौर्यासी की थी वहाँ अपना एक भव्य मंदिर है । श्रीहरि के चरणों से अंकित प्रसादी के स्थान पर तीन शीखर वाला शिल्प शास्त्र के मुताबिक एक महा मंदिर के निर्माण की प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आज्ञा दी है ।

प.पू. लालजी महाराजश्री की छत्रछाया में यहाँ के महंत गुस्प्रसादकी प्रेरणा से यह मंदिर शिल्प शास्त्र के निष्णांत सोंपुरा के कारीगरो से करवाया जायेगा । दि. ९-५-२००४ को प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलों से खात मुहूर्त किया गया । यजमान पद का लाभ अ.नि. भालजा साहब के हरिभक्तों ने लिया था । इस अवसर पर पू. महंत स्वामी (अहमदाबाद), पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), शा. स्वा. केशवप्रसाददास इत्यादि संत उपस्थित थे । तो आनंदप्रसाददास महंत स्वा. देवकृष्णदासजी तथा मरोत्तम भगत ने सुंदर सेवा की थी । *- पूजारी स्वामी*

वाली (राजस्थान) मंदिर

यहाँ विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का ७५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत निर्मलदासजी तथा स्वा हरिप्रसाददासजी तथा बिलिया के महंत घनश्याम स्वामी तथा चंद्रप्रकाशदासजी, विजयप्रकाशदासजी, ब्रह्मस्वस्मदासजी, स्वामी देवप्रसाद इत्यादि संतों ने साथ मिल कर मनाया था ।

इस अवसर पर मंदिर की तरफ से श्री नरनारायणदेव गादी द्धारा संचालित श्री स्वामिनारायण विधायकका उदघाटन खूब धाम धुम से किआ गया । इस अवसर पर पूर्व विधायक पूराराम चौधरी, मोरारदासजी तथा गुमानसिंह उपस्थित रहे थे । *- कोठारी हरिप्रसादजी*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

हलवद

प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजकी आज्ञा से तथा मूली के वयोवृध्ध संतश्री राधामनोहरदासजी की उपस्थिति तथा स्वा. श्रीजीस्वरुप की

प्रेरणा से २१-३-०४ के सत्संग सभा की गई थी । जिसमें भक्तिविहारी, स्वा. विश्रविहारी आदि संतोने कीर्तन तथा ज्ञान वार्ता की थी । श्री राधामनोहरदासजी (७३ वर्ष) की भावाधीन होकर कीर्तन गाये थे । *- चंदुलाल चावडा*

लींबडी मंदिरमें पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा महंत स्वा. भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से श्री बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का १४ वॉ पाटोत्सव तथा बहनो का तथा तपोवन मंदिरका पाटोत्सव महाराजश्री के करकमलो से संपन्न हुआ । महापूजा यहॉ के संतो ने करवाई थी ।

- वंदनप्रकाश स्वामी

सुरेन्द्रनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा तथा म.स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष की अखंडधुन, १२-०० श्री राम जन्मोत्सव शामको शोभायात्रा, रात को १०-१० के श्रीहरि प्राकटोत्सव हुवा था । *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

मेमका

यहॉ श्री नरनारायण मंडल के बहनों प्रत्येक पूनम तथा अमावस्या को सभा का आयोजन करती हैं । प्रत्येक एकादशी को प्रभातफेरी निकलती है तथा सभा का मंदिर में आयोजन होता है । प्रत्येक रविवार को बाल मंडल के बालिकाओं की सभा होती है । जिस पर प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री अत्यंय प्रसन्न है ।

- श्री स्वा. मं. महिसा मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडपर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

दि. २८-४-०४ को मोडवर श्री स्वामिनारायण मंदिर का नवनिर्माण कार्य प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर के महंत ध्यानी स्वामी द्वारा पूर्ण होते मंदिर में श्री स्वामिनारायण भगवान की षट मूर्तियों की प्रतिष्ठा महोत्सव श्री नरनारायणदेश अहमदाबाद के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो से संत हरिभक्तों की उपस्थिति में संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर ध्यानी स्वामी ने कहा है कि मनुष्य जन्म मिलना बहुत दुर्लभ है इस जन्म में भगवान की भक्ति कर लेना तथा मोक्ष संबंधी कार्य कर लेना ।

इस अवसर पर आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ने कहा ध्यानी स्वामी का प्रेम खीच लाया है । आपने देखा हमें स्वामीने प्रेमसे पानी दिया इसलिए गरमी होते हुए प्यास नही लगती हम जब भूकंप के समय आये थे तब एक हरिभक्त ने गाड़ी रोक कर कहवाया की हमने आपके लिए चने रखे है । भूकंप की परिस्थिति में हम देने आये है लेकिन हरिभक्तो के प्रेम तथा आग्रहाधीन हो कर लेने पड़े ।

इस अवसर पर स.गु. कृष्णवल्लभ-दासजी, अहमदाबाद मंदिर के सत्यप्रकाशदासजीने उदबोदन किआ था ।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

टोरेन्टो, केनेडा (I.S.S.O.) में श्री स्वामिनारपायण जयंती मनाई

३०-३-०४ को श्रीहरि जयंती के दिन टोरन्टो केनोडा सत्संग मंडलकी सभा प.भ. श्री शशीकांतभाई के घर हुई थी ।

श्री स्वामिनारायण भगवानका २२४ वॉ पाटोत्सव सभी हरिभक्तोने निष्ठापूर्वक मनाया । भजन, कीर्तन तथा वचनामृत का अमूल्य लाभ लिआ ।

घर पर बनाये हुए पकवान का सुंदर अन्नकुट के मूर्ति समक्ष किया था । सभा के अंत में आरती, धून हुई तथा महाप्रसाद ग्रहण किया प.भ. रसिकभाई पटेल, प.भ. श्री दशरथभाई चौधरी तथा टोरेन्टो के सभी सत्संगी उपस्थित रहे थे ।

- टोरेन्टो केनेडा सत्संग मंडल

लेस्टर (U.K., I.S.S.O.)

यहॉ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से रामनवमी शुभ दिन ३०-३-०४ को १० से १२ राम जन्मोत्सव, शाम ६ से ८ श्रीहरि जयंती के अवसर पर धून भजन किये ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव तथा ३५ वें गादी अभीषेक पर ४-४-०४ के सुबह ८ से १२ तक धूनी की गई थी इस अवसर पर कई हरिभक्त आये थे ।

- हेमराजभाई चोटलीया

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद : प.भ. महेन्द्रभाई चिमनलाल भावसार ता. २८-२-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

अमदावाद (उनावावासा) : प.भ. अंबालालभाई पंचाल के पुत्र श्री वासुदेवभाई श्रीहरि का स्मरण करते अक्षर निवासी हुए ।

मोरबी : प.भ. मणीलाल प्रेमजीभाई ता. १३-३-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

अमदावाद (बापुनगर) : प.भ. डॉ. कनुभाई एस. पटेल (एप्रोच मंदिर ट्रस्टी) की माताजी८२ वर्ष ता. ८-३-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

अमदावाद (बापुनगर) : प.भ. धीरूभाई मगरभाई डुम्मर अंक के प्रतिनिधि (४५ वर्ष ता. २-३-०४ के दिन श्रीहरिका स्मरण करते अक्षर निवासी हुए ।

घागधा : प.भ. हरजीवनभाई गांधी ता. ३-३-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

अमदावाद : प.भ. कानजीभाई डाह्याभाई सोनी अमदावाद मूली दोनो मंदिर की खूब सेवा किये वैशाख शुक्ल १ को अक्षरनिवासी हुए ।

बावला : प.भ. ठक्कर अमृतलाल हेमचन्द्रभाई ता. २०-४-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।

महेसाणा : श्री अमथीबहन अमृतलाल मोदी श्रीहरिका स्मरण करते अक्षर निवासी हुए ।

दहेगाम : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी श्री अरविंदभाई के बडे भाई प.भ. कनुभाई ता. २५-५-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए ।



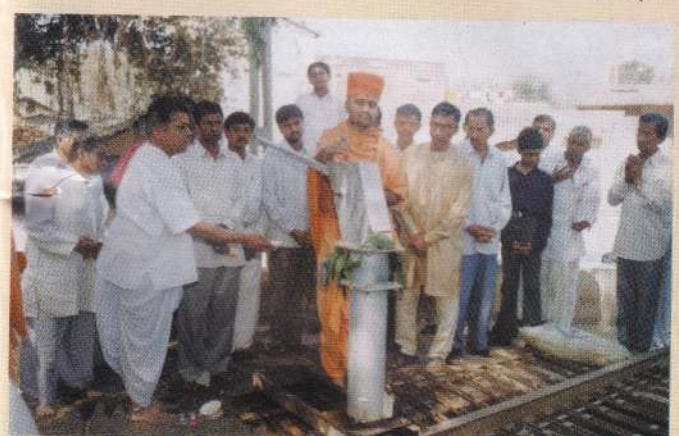


पाटोत्सव सभा में आशीर्वचन प्रदान करते हुए आचार्य महाराजश्री (श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका) । यजमान परिवार के श्री प्रेमचंदभाई पाटडिया और उनके भाई उत्सव सभा में आचार्य महाराजश्री को आरती-पूजन अर्पित करते हुए । साथमें है देव स्वामी और कोठारी स्वामी सत्यप्रकाशदासजी ।





श्री तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशनल फाउन्डेशन, मुक्तपुर (ऊंझा) के तृतीय वार्षिकोत्सव में आशीर्वचन प्रदान करते हुए आचार्य महाराजश्री महंत स्वामी शास्त्री आत्मप्रकाशदासजी एवं संत मंडल की उपस्थिति में विद्यार्थियों द्वारा प्रेषित सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक ।

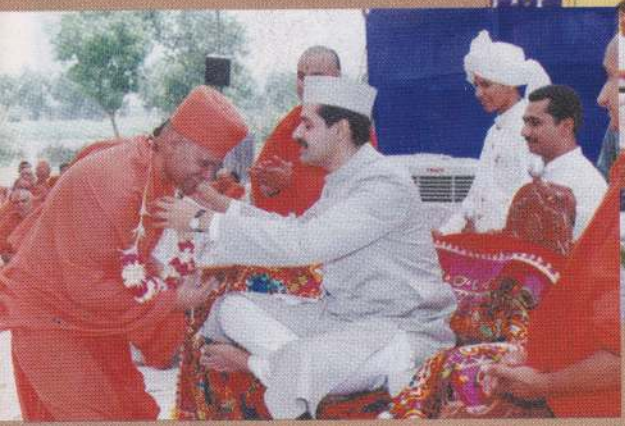


कठलाल के ग्रामजनों को प्रसादी जल-कूप का जल उपलब्ध कराने के लिए स.गु. शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी हैड पंप का उद्घाटन कर रहे हैं ।



श्री स्वामिनारायण मंदिरखान (राजस्थान) की पाटोत्सव सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में संबोधित करते हुए स.गु. शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ।

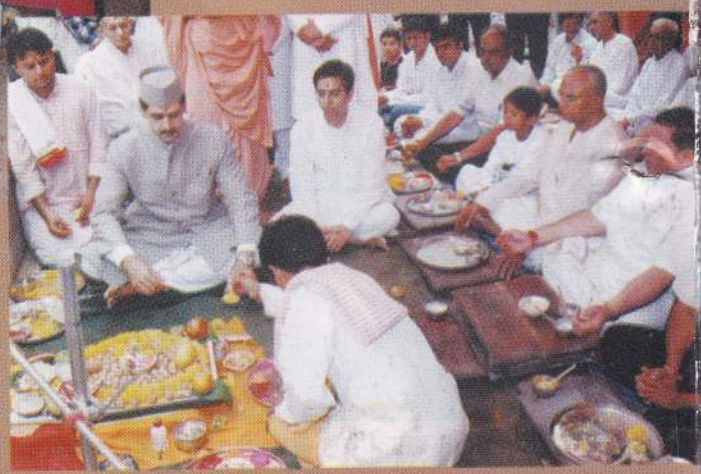




श्री स्वामिनारायण गुरुकुल (जेतलपुर) के रजत जयंती उत्सव में अपने अनुयायियों को दिव्य दर्शन से अनुग्रहित करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । प.पू. लालजी महाराजश्री स.गु. शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी को सन्मान आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया के लिए भूमि-पूजन विधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



प.पू. लालजी महाराजश्री शिखरबध्ध मंदिर के लिए भूमि-पूजन कर रहे हैं और यजमान परिवार इस अवसर से लाभान्वित हो रहा है ।